आँसू लावनी



डॉ. नीरज सुधाँशु

शीर्षक चयनः

शीर्षक का चयन करना भी एक जटिल कार्य है। वह ऐसा होना चाहिए जो पुस्तक में प्रस्तुत सामग्री के अनुरूप हो। प्रस्तुत पुस्तक में केवल एक ही शब्द 'आँसू' को लेकर 111 छंद लिखे गए हैं, अतः सबसे उचित शीर्षक 'आँसू' ही होता।

किन्तु 'आँसू' शीर्षक से महान कवि श्री जयशंकर प्रसाद की कृति उपलब्ध है। इस पुस्तक का शीर्षक भी आँसू ही सटीक लगता है,किन्तु यह अनुचित होता। मेरी पुस्तक में आँसू पर लिखे गए छंद ताटंक विधा में लिखे गए हैं एवं 'ताटंक' छंद को 'लावनी' भी कहा जाता है, अतः लावनी विधा में लिखे गए आँसू पर मुक्तक , इस विशेषता को ध्यान में रखते हुए मैंने अपनी कृति का शीर्षक 'आँसू लावनी' रखा है। आशा है पाठकों को उचित व आकर्षक लगेगा।

डॉ. नीरज सुधाँशु

श्रद्धेय

श्री रामस्वरूप आर्य जी

को

सादर भेंट

डॉ. नीरज सुधांशु

आँसू लावनी

डॉ. नीरज सुधांशु

प्रकाशक :
VANIKAA PUBLICATIONS
वनिका पब्लिकेशन्स

ISBN 978-81-930242-0-1

978-81-930242-0-1

प्रकाशक :

VANIKAA PUBLICATIONS

वनिका पब्लिकेशन्स

एन ए - 168, गली नं - 6, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली -100018
शाखाः सरल कुटीर, आर्य नगर, नईबस्ती, बिजनौर-246701 (उप्र.)

फोन : 09412713640
01342-262186
इमेल : contact@vanikaapublications.com
vanikaa.publications@gmail.com
वेबसाइट : www.Vanikaapublications.com
संस्करण : प्रथम 2014
टाइप सैटिंग : न्यूटैक ग्राफिक्स
मुखावरण : डॉ. आर. के. तोमर
चित्रसंयोजन : डॉ. आर. के. तोमर
मुद्रक : न्यूटैक ग्राफिक्स, 260, आदर्श नगर, जयपुर
91-98281 27871
मूल्य : 300/-

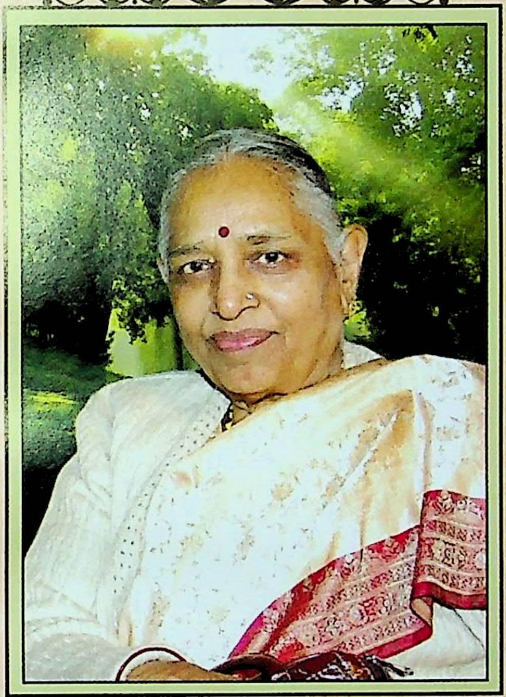
ANSOO LAVANI
BY DR. NIRAJ SUDHANSHU

Price : 300/-



अर्घ्य चढ़ाऊँ, अंजुरि भर भर,
चरणों में तेरे, आँसू।
हंसवाहिनी, ज्ञानदायिनी
स्वीकारो, मेरे आँसू।
वरद हस्त माँ, तेरा पाकर,
भावों की जयमाल लिए
धन्य हो गए आज, कलम से
लेकर के फेरे आँसू।

ममतामयी माँ को समर्पित



चली गई माँ देश अजाने
नयनों से बहते आँसू।
शून्य चतुर्दिक व्याप गया है
मन–पीड़ा सहते आँसू।
शब्द सांत्वना भरे विकल मन
को ना समझा पाते हैं
जिया न जाए तुम बिन वापस
आ जाओ कहते आँसू।।

पद्मभूषण, पद्मश्री (राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त)
डॉ० गोपाल दास 'नीरज'
एम०ए०, डी०लिट् (मानद)
कुलाधिपति, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़

जनकपुरी, मैरिस रोड,
अलीगढ़ - 202 001
फोन : 0571-2402605
मोबा : 09412671777

पत्रांक.............. दिनांक 27/07/2014

माननीय श्री नीरज जी के आशीर्वचन



नीरज जी के साथ कवयित्री नीरज–सुधांशु

डॉ श्रीमती नीरज सुधांशु की कृति 'आँसू लावनी' के कुछ छन्द मैंने उन्हीं के मुख से सुने, जो मुझे बहुत अच्छे लगे, यद्यपि इनसे पूर्व जयशंकर प्रसाद जी की 'आँसू' कृति बहुत लोकप्रिय हुई थी, लेकिन इनके आँसू जयशंकर प्रसाद जी के आँसू से भिन्न हैं। उनके आँसू तो उनकी घनीभूत पीड़ा के परिणाम हैं और डॉ नीरज सुधांशु के आँसू पीड़ा से भी, प्रेम से भी, दुख से भी, सुख से भी, करुणा से भी उत्पन्न हैं और उनके आँसू का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। व्यष्टि से लेकर समष्टि तक इनके आँसुओं की धारा पहुँचती है और फिर धीरे–धीरे बहकर के वो अध्यात्म तक पहुँच जाती है। ये विशेषता ही उन्हें एक मौलिक रचनाकार के रूप में हमारे सामने लाती है। मधुशाला के छन्द में ही ये'आँसू लावनी' कृति लिखी गई है और जिस प्रकार से मधुशाला लोकप्रिय हुई थी, उसी प्रकार से मुझे विश्वास है, डॉ श्रीमती नीरज सुधांशु की कृति

• यश भारती • रजतश्री • भारती-तिलक • साहित्य वाचस्पति • टैगोर वाचस्पति • विद्या वाचस्पति
• गीत सम्राट • गीत-गंधर्व • गीत ऋषि • राष्ट्र-गौरव • हिन्दी गौरव सम्मान

पद्मभूषण, पद्मश्री (राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त)
डॉ० गोपाल दास 'नीरज'
एम०ए०, डी०लिट् (मानद)
कुलाधिपति, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़

जनकपुरी, मैरिस रोड,
अलीगढ़ - 202 001
फोन : 0571-2402605
मोबा. 09412671777

पत्रांक............

दिनांक 27/07/2014

'आँसू लावनी' लोकप्रिय होगी। हर मुक्तक के अन्त में पेन्सिल से जो चित्रांकन किया गया है, वो चित्र आँसू की कहानी कहते जान पड़ते हैं। ऐसी ही एक कृति महादेवी वर्मा जी की भी आ चुकी है जो बहुत प्रसिद्ध हुई थी।

आँसू बहुत कीमती चीज़ है। यही आँसू कभी मेघदूत बना, कभी रामायण बना, कभी प्रिय–प्रवास बना। हर काव्य, हर महाकाव्य, हर खण्ड काव्य के पीछे आँसू ही है, जो शब्द में इस प्रकार घुल जाता है जैसे, पानी में मिसरी।

हर आँख यहाँ यूँ तो बहुत रोती है
हर बूँद मगर अश्क नहीं होती है।
पर देख के रो दे जो ज़माने का ग़म
हर आँख से आँसू जो गिरे मोती है।।

डॉ. श्रीमती नीरज सुधांशु के आँसू भी संसार के दुख और पीड़ा से जुड़कर मोती के समान ही हो गए है।

मेरी शुभकामना है कि इनकी कृति 'आँसू लावनी' साहित्य जगत में बड़े प्रेम से पढ़ी और सराही जाएगी।

27/07/2014

• यश भारती • रजतश्री • भारती-तिलक • साहित्य वाचस्पति • टैगोर वाचस्पति • विद्या वाचस्पति
• गीत सम्राट • गीत-गंधर्व • गीत ऋषि • राष्ट्र-गौरव • हिन्दी गौरव सम्मान

शुभास्ते पंथान :



वैद्य कृष्ण मोहन 'मंजुल'

प्रिय डॉ. श्रीमती नीरज सुधांशु का प्रथम काव्य–संग्रह ''आँसू लावनी'' प्रकाशित हो रहा है। इस सुखद अवसर पर मैं डॉ. नीरज को हार्दिक बधाई देता हूँ। डॉ. नीरज ने चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन श्री सरकारी अखंडानन्द आयुर्वेदिक महाविद्यालय , अहमदाबाद से किया, जहाँ मैं भी प्राध्यापक था यह सन् 1982 का समय था। तब से आज तक लगभग 32–वर्ष से डॉ नीरज और उनके परिवार से मेरा परिचय रहा है।

प्रारम्भ से ही नीरज की अध्ययन में तेजस्विता, नया–नया सीखने की जिज्ञासा, वाद–विवाद तथा निबन्ध लेखन में रुचि व उत्तम प्रदर्शन से मैं प्रभावित रहा हूँ। वह साहित्य और काव्य में भी रुचि रखती है, इसका ज्ञान मुझे 1–2 वर्ष बाद हुआ। नीरज की माताजी हिन्दी साहित्य पढ़ाती थीं, वे ही नीरज की प्रेरणा स्रोत रहीं। नीरज की शादी के बाद उनके पति डॉ. सुधांशु से भी परिचय हुआ और आज तक हम पारिवारिक सूत्र में बँधे हैं। यह संपर्क बढ़ता ही रहा है।

जैसा कि मैंने बताया, नीरज को हिन्दी साहित्य, कविता, निबंध, पत्रकारिता का व्यसन रहा है। व्यवसाय से वे स्त्रीरोग विशेषज्ञ हैं, अतः अधिकतम समय चिकित्सा को तथा परिवार को देने के बाद भी वे कविता, आलेख के लिए कब समय निकाल पाती हैं, आश्चर्य ही है।

समय समय पर नीरज की कविताएँ, आलेख पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। सहयोगी कवि के रूप में कई काव्य संग्रहों में उनकी कविताएँ छपी हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर भी कविताओं एवं वार्ताओं का प्रसारण होता रहता है।

अब इस नव–प्रकाशित संग्रह की चर्चा करें, तो ''आँसू'' पर नीरज ने 35–40 छंद कई वर्ष पूर्व ही लिख लिए थे। वे छन्द लगभग भुला ही दिए गए थे। परिवार के दायित्व और चिकित्सा–व्यवसाय की व्यस्तता में खो भी जाते, पर ऐसा हुआ नहीं। इस बीच नीरज की माताजी–श्रीमती ललिता शर्मा जी का निधन 1–मार्च 2012 को हो गया। बेटी के लिए माँ का महत्व सहृदय व संवेदनशील जन जानते ही हैं। मातृ–शोक ने कोमल हृदय को झंझोड़ा और मातृ–विछोह छन्दों में प्रस्फुटित होने लगा। इस शोक के समय में अनेक छन्दों की रचना हो गई। मातृ शोक तो जीवन भर हृदय को कुरेदता रहेगा––

हर बात–बात में याद तुम्हारी आएगी।
तुमको इतनी जल्दी क्या थी जाने की?

इसी अवधि में पूर्व में लिखे आँसू छन्दों का भी स्मरण आया–कुछ छन्द आँसू पर और लिखे गए, छन्द श्रेष्ठ बनने लगे तो प्रिय सुधांशु व पुत्र–अंशुल, अंकुर, पुत्रवधू–पल्लवी ने प्रेरणा दी तो 40–50 छन्दों का आँकड़ा 100 तक पहुँचा और शगुन का एक छन्द और लिखकर संख्या 101 कर दी गई। अभी मैं पुस्तक के बारे में दो –शब्द लिख रहा हूँ तो सोचता हूँ, मेरा आलेख पहुँचे तब तक तो और कई छन्दों की रचना न हो गई हो।

आइए! आँसू को विषय बनाकर डॉ. नीरज द्वारा लिखे छन्दों की चर्चा करते हैं।आँसू को प्रास (रदीब) बनाकर शताधिक छन्दों की रचना करना, एक अदम्य इच्छाशक्ति ,प्रयास और प्रेरणा के बिना संभव ही नहीं है। आँसू को विषय बनाकर श्री जयशंकर प्रसाद सहित अन्य महाकवियों ने भी पुस्तकें लिखी हैं, परन्तु नीरज का हर छन्द में आँसू को प्रास (रदीब)

बनाकर शताधिक छन्द लिखना, अनुपम प्रयास है। इसकी साम्यता श्री हरिवंशराय बच्चन जी की 'मधुशाला' से की जा सकती है। छन्द भी समान है। दोनों रचनाओं में ताटंक छन्द को चतुष्पदी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

यूँ तो शास्त्रों में आँसू आठ प्रकार के बताए गए हैं–यथा–हर्ष, शोक, क्रोध, संयोग, वियोग, कपट, प्रेम, अहेतुक– (करुणा, भक्ति, प्रार्थना आदि में अहेतुक)। परम भक्तों यथा सूरदास, मीरा आदि ने अश्रुओं के अर्घ्य से अपने ईष्ट की भक्ति की है। ये अहेतुक अश्रु उच्च कोटि की भक्ति, प्रेम, संवेदना के परिचायक हैं। यथा–

निसदिन बरसत नैन हमारे ।
सदा रहत पावस ऋतु हम पै
जब तें श्याम सिधारे। (संत सूरदास)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
अंसुवन जल सींचि सींचि,प्रेम बेल बोई (संत मीरा बाई)

इन संतों ने अश्रु बहा बहा कर भक्ति का आनन्द पाया है।

डॉ नीरज ने अनेक तरह से आँसुओं को देखा है, जाना है, भोगा है,तभी तो वे आँसू के अनेक रूपों को लिख पाई हैं। नीरज के आँसू संख्या के दायरे में नहीं बँधते। यह आँसुओं का शास्त्र नहीं है, यह तो कवि की अनुभूतियों का छन्द जाल है, जिसमें पाठक फँसकर भी आनन्द की अनुभूति करता है।

मुझे सहज ही 'मिलन' फिल्म का गीत याद आ रहा है, जिसमें गीतकार कहता है कि – आँसुओं के भेद नहीं हो सकते ....

मुबारक हो सबको , समाँ ये सुहाना।
मैं खुश हूँ मेरे आँसुओं पे न जाना।

मैं तो दीवाना,दीवाना, दीवाना
हज़ारों तरह के, ये होते हैं आँसू
खुशी में भी दामन भिगोते हैं आँसू
नहीं जान सकता इन्हें ये ज़माना।

इस मधुर गीत के तथ्यों को डॉ. नीरज ने समझा है, इसीलिए वे आँसू पर शताधिक छन्द लिख पाईं। सचमुच नीरज साधुवाद और बधाई की पात्र हैं।

आइए अब हम इस पुस्तक के सुन्दर छन्दों का अवलोकन करें–

जैसी व्यथा भाव की वैसी, अभिव्यक्ति पाते आँसू।
भीगी पलकें रक्तिम नैना, बहकर हो जाते आँसू।
अधर फड़कते रुँधे गले में, शब्द रुके रह जाते हैं
बह कुल्या सम ढुलक गाल से, वसन भिगो जाते आँसू।

इस छन्द में नीरज आँसू की विविधता की ओर इंगित करती हैं। आँसू बहते समय आँखों व मुख के हाव भाव कैसे हो जाते हैं, इसका सुन्दर चित्रण किया है।

आँसू आँख के साथ हृदय की थाती हैं। इन्हें कोई चुरा नहीं सकता। इनका संबंध तो अंतर्मन से है.....

चुरा सके न चोर कोई है, अमोल धन बहते आँसू।
एक छिद्र सम बनी तिजोरी, में अनगिन रहते आँसू।
इन पर तो एकाधिकार है, केवल अंतर्मन का ही
वह चाहे संचित रहते हैं, चाहे तो बहते आँसू।

आँसू घाव ही नहीं देते, मरहम का काम भी करते हैं, इस भाव को कितनी सुन्दरता से अभिव्यक्त किया है, आनन्द लीजिए–

हो आघात अगर तो छलनी, मन करते हरदम आँसू।

इनसे बात छिपे ना कोई, दरपन से ना कम आँसू।
शुष्क मनस का तर्पण करते, भावशून्य जब वह होता
मन की पीड़ा हरते मन के, घावों पर मरहम आँसू।

आँसू शायरों व कवियों से कैसे ग़ज़ल व कविता का सृजन करवा लेते हैं देखिए....

कभी कल्पना बनकर कवि की, ग़ज़लों में छाते आँसू।
मिलन–विरह के गलियारों में,गीत ग़ज़ल गाते आँसू।
गीतों के ताने–बाने में, इनका ही लगता धागा
मन की गहराई को छूकर, टपक–टपक जाते आँसू।

आँसू एक बड़ी दौलत है, बड़ा खज़ाना है, देखिए– यह छन्द–

इस दौलत से रहित न कोई, पास रहें सबके आँसू।
जीवन का अनमोल ख़ज़ाना, कितने ही टपकें आँसू।
ऊँच–नीच से परे रहें ये, धनी हो कि निर्धन कोई
बहें नयनसुख सूरदास के, इक जैसे सबके आँसू।

छंद 14 व 15 में भिन्न–भिन्न तरह के आँसुओं का वर्णन है–खुशी के आँसू, सियासत के आँसू, नफासत के आँसू, ममता के आँसू, दिखावटी आँसू, भक्ति के आँसू इत्यादि......।

सभी छन्द सुन्दर बन पड़े हैं। भाषा संस्कृत गर्भित है। छन्दों में प्रवाह है। हमारी संस्कृति सत्य, शिव और सुंदर में विश्वास करती है, अतएव जो सत्य और शिव की भावव्यंजना हुई है उसमें रेखाचित्रों ने चार चाँद लगा दिए हैं। पुस्तक भावव्यंजना की दृष्टि से तो सर्वश्रेष्ठ है ही, पर कलाकार ने छंदों को चित्रों से सजाकर पुस्तक के सौंदर्य की श्रीवृद्धि की है। इसके लिए डॉ नीरज एवं डॉ. आर. के. तोमर दोनों अभिनंदन के पात्र हैं। आशा ही नहीं, मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठकों को चित्रांकन से सुसज्जित पुस्तक आनन्द का रसास्वादन कराएगी एवं पाठकों का मन जीतेगी। मैं पुनः पुनः इस

संग्रह के लिए डॉ. नीरज सुधांशु को हार्दिक बधाई एवं आशीर्वाद के साथ शुभ–कामना देता हुआ, अपने एक छन्द के साथ आलेख का समापन करता हूँ।

दुख में तो आते ही आते, सुख में भी आते आँसू।
प्यारा मित्र अगर मिल जाए, गागर भर लाते आँसू।
सुख में दुख की, दुख में सुख की, समझ बराबर होने पर
आत्म–तुष्ट जन को सुख दुख में, कभी न अकुलाते आँसू।

ये अश्रु कहाँ बनते हैं
ये अश्रु कहाँ से आते
इक छोटी सी ग्रन्थि में
इतने कैसे रह पाते?

शुभास्ते पंथानः।।

वैद्य श्री कृष्ण मोहन शर्मा
कोटा (राजस्थान)
9 जून 2014

डॉ नीरज सुधांशु एवं उनका आँसू लावनी काव्यः



डॉ. अजय जनमेजय

डॉ. नीरज बहुआयामी व्यक्तित्व की रचनाधर्मी कवयित्री हैं। आप जहाँ एक सफल आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं वहीं एक गृहिणी का धर्म निभाते हुए, एक आदर्श माँ हैं, जो अपने बच्चों से व घर में आई नन्हीं पोती से बेहद लगाव रखती हैं। उनकी छोटी–छोटी बात पर वे बेहद संवेदनशील हैं। आपको ज्योतिष विद्या में रुचि है।समय मिलने पर आप उसका अध्ययन करती रहती हैं। इतनी सारी व्यस्त ज़िम्मेदारियों के बीच आपके अंदर छिपा हुआ साहित्यकार भी सक्रिय रहता है। आप समाज में आने वाली हर छोटी–बड़ी बात पर अपनी प्रतिक्रिया कलम के द्वारा कागज़ पर उकेरती रहती हैं।

इधर जिस पुस्तक की पांडुलिपि से मैं गुज़र रहा हूँ, यह उनके संवेदनशील होने का मात्र द्योतक ही नहीं बल्कि दस्तावेज़ है कि वे हर बात पर काफी गहरे तक मनन–चिंतन करने वाली रचनाकारा हैं। यह तभी संभव हो सकता है कि कोई रचनाकार आँसू जैसे धीर–गंभीर विषय पर छंद लिखे और लगातार एक सौ ग्यारह छंद 'आँसू' पर लिख कर काव्य संग्रह पूर्ण भी करे। उनके इस महत् कार्य के लिए उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ और भविष्य के लेखन के लिए अनेकानेक मंगलकामनाएँ।

अब बात संदर्भित पुस्तक के बारे में–कवयित्री नीरज ने जब भूमिका लिखने के लिए अपनी यह कृति मुझे सौंपी तो मैं विचार करने लगा क्या वास्तव में 'आँसू' जैसे विषय पर भी पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है, किन्तु वास्तविकता मेरे सामने थी। मैं पाण्डुलिपि का अध्ययन करने लगा।

इसी अध्ययन के दौरान ही डॉ. नीरज से दूरभाष पर संवाद हुआ, और इसी संवाद क्रम में उन्होंने मुझसे पूछा– आजकल आप किस विधा में लिख रहे हैं, क्या लिख रहे हैं? तो मैंने उन्हें कुण्डली एवं मुक्तकों पर काम करने की बात बताई और उनसे कहा कि यदि मैं आपकी पुस्तक पर अपनी बात को कुण्डली अथवा मुक्तकों के माध्यम से कहूँ तो कैसा रहेगा।

मेरी बात सुनकर वे बोलीं, अरे! इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है, आप मेरी पुस्तक की भूमिका कुण्डली या मुक्तकों के रूप में अथवा काव्यमयता में लिखें, यह तो एक अलग ही प्रयोग होगा और आगे भूमिका लेखन अथवा लिखने वालों के लिए भी एक नया मार्ग प्रशस्त करेगा।

उनकी इस सहमति पर पुस्तक की रचनाओं की भाव–भूमि पर मैंने कुण्डलियाँ छंद के माध्यम से ही इस पुस्तक के बारे में अपनी बात को कहने का प्रयास किया है। यह प्रयोग निश्चय ही सुहृद पाठकों एवं रचनाकार मित्रों को भाएगा।

कवयित्री नीरज ने सबसे पहले माँ सरस्वती की वंदना की है–

नीरज की ये साधना, फलित हुई है आज
ज्ञानदायिनी की कृपा, पूर्ण हुआ ये काज
पूर्ण हुआ ये काज, काव्य की बहती धारा
आँसू का हर रूप, हुआ इसमें उजियारा
लेखन में इक बात, चाहिए वो है धीरज
बहती है रसधार, बहातीं जैसे नीरज।

अच्छे कार्य के सुआरंभ में ईश वन्दना करना भारतीय परम्परा रही है। इसका पालन डॉ. नीरज ने भी किया है–

माँ की करके वंदना, की लेखन शुरुआत
माँ से फिर मिलती रहे, लिखने की हर बात
लिखने की हर बात रास्ता वही बताती

रुके जहाँ पर सोच, सोच को राह दिखाती
पूजें माँ का रूप शुरू फिर क्या कुछ बाकी
ले जो माँ का नाम, कृपा हो उस पर माँ की।

माँ–पिता का स्थान सबसे ऊँचा माना गया है। उन्हीं की बदौलत हमें जीवन मिलता है, उनके सद्कर्मों,सद् मार्ग दर्शन एवं उनकी श्रम साधना से बच्चा अपने जीवन में आगे सफल होता है। डॉ नीरज अपनी कृति को माताश्री को समर्पित करती चलती हैं–

किया समर्पण मातु को भर, नयनों में नीर
बिना तुम्हारे मातु मैं, हर पल रहूँ अधीर
हर पल रहूँ अधीर तुम्हीं से पाया जीवन
मिला रूप, रस, गंध, तुम्हीं से महका उपवन
दिखलाई हर राह, बनीं माँ तुम ही दर्पण
पहला पहला काव्य, किया है तुम्हें समर्पण।

मानव की प्रवृत्ति है जब भी उसे अपनों से प्यार–दुलार मिलता है,तो बरबस उसका मन भर उठता है। वह कुछ कहना चाहता है पर कह नहीं सकता, उसके लब हिल कर रह जाते हैं और आँखें नम हो जाती हैं, इसका अनुभव कवयित्री करती चलती है–

मुस्काते आँसू कभी , पाकर निजता प्यार
कभी–कभी बनकर बहें ,नयनों से मनुहार
नयनों से मनुहार ,बात आँखों की करते
नौ रस का अवतार रूप ये सबका धरते
कभी बिना ही बात, आँख में भर–भर लाते
कभी अधर चुपचाप, मगर आँसू मुस्काते।

सम–विषम परिस्थितियों में व्यक्ति की भावुकता को आँसू सामने ले आते हैं–

दर्पण है मन का सदा, नयनन बहता नीर
चाहे मन में प्यार हो, या मन रहे अधीर

या मन रहे अधीर, बनें घावों का मरहम
हों कोई हालात, साथ में रहते हरदम
ऊँच–नीच से दूर सभी का सींचे उपवन
आँसू है सौगात, सदा से मन का दर्पण।

मानवीय प्रवृत्ति है कि वह अपने ईष्ट की दिल की गहराइयों से आराधना करता है। अनेक रचनाकार रहे हैं, जिन्होंने अपने ईष्ट के लिए ही लेखन किया है और उसी से प्रेरणा ली है। ये भाव नीरज के यहाँ भी साथ चलता प्रतीत होता है–

बहते, कागज़ पर कभी, ले शब्दों का रूप
आँसू हैं छाया कभी, ये ही जीवन धूप
ये ही जीवन धूप, छन्द बन बहते झर–झर
ये ही कभी गणेश, कभी ये भोले हर–हर
उनको देते सीख, सीख जो इनसे गहते
आँसू बनकर शब्द काव्य में झर–झर बहते।

पूर्व में ग़ज़ल को आशिक, माशूक एवं दरबारों तक से जोड़ा जाता रहा है, जबकि अब ऐसा नहीं है, ग़ज़ल के माध्यम से अब समाज के हर पहलू को सामने रखा जाने लगा है। नीरज इसको लेकर चलती हैं–

बनकर कवि की कल्पना, लेते खुद को ढ़ाल
आँसू बदले रूप जब, करते खूब कमाल
करते खूब कमाल कभी ग़ज़लों में छाते
कभी विरह का गीत, किसी का दिल छू जाते
कभी पंखुरी रूप, कभी ये मिलते तन कर
लेते खुद को ढ़ाल कल्पना कवि की बनकर।

आँसू जहाँ प्यार के अतिरेक में बहते हैं, वहीं कभी ऐसी परिस्थितियाँ या दुख की घड़ियाँ आ जाती हैं कि रोते–रोते आँखें पथरा

जाती हैं और उनसे आँसू बहने थम जाते हैं, बहे आँसू गालों पर सूख जाते हैं, नीरज भी ऐसी परिस्थिति से गुज़रती हैं–

सूखें गालों पर कभी, कभी भिगोते वस्त्र
कभी प्यार के बोल तो, कभी अस्त्र ये शस्त्र
कभी अस्त्र ये शस्त्र, कभी पलकों पर नाचें
करें कभी ये शोध बात ये दिल की बाँचें
रोएँ पाकर प्यार ,प्यार के ये हैं भूखे
कभी भिगोते वस्त्र, कभी गालों पर सूखें।

लम्बे अन्तराल से जब भाई–बहिन का मिलन होता है तब खुशी से भावावेश में, न चाहते हुए भी मिलन के आँसू छलक ही पड़ते है–

बच्चे से आँसू लगें, बहें अगर बिन बात
जज़्बाती बन कर बहें, बिन देखे दिन रात
बिन देखे दिन रात कभी ये खूब हँसाते
हँसते– हँसते आँख, आँख में भर– भर आते
घर आवे जब वीर नयन में मोती सच्चे
कभी–कभी सौगात, लगे ये मानो बच्चे।

जन आक्रोश, अपनी बात को मनवाने अथवा सरकारी विभागों में कार्य करने वाले अपनी माँगों की पूर्ति के लिए सरकार विरोधी हड़ताल कर देते हैं, तब सरकारी व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने अथवा जन आक्रोश को रोकने के लिए सरकार हर संभव एवं साधनों का प्रयोग करती है तब की स्थिति पर डॉ नीरज नज़र रखने से नहीं चूकतीं हैं–

हड़ताली बन कर मिलें, आँखों में बन बूँद
तेज़ चुभन जब–जब लगे अँखियाँ लेते मूँद
अँखियाँ लेते मूँद, टपाटप गिरते घट से
गिरे नैन जो धूल, बहेंगे फिर तो झट से

आया मौका देख, बहें बनकर पड़ताली
सरकारी हथियार, दिखें जैसे हड़ताली।

बिटिया हो या बेटा जब भी परदेश होते हैं तब उन्हें अपने घर, माता–पिता, अत्यंत निकट रहे मित्रों की मधुर यादें आते ही आँखें नम अवश्य हो जाती हैं–

बाबुल की इक याद से, भर जाते हैं नैन
उड़कर के पहुँचूँ वहाँ, मन होता बेचैन
मन होता बेचैन, लगे तब आँसू नमके
कभी कभी बिन बात बिना आहट ही धमके
बिन पानी बिन तार, पीर कहते व्याकुल की
अँखियाँ भर भर नीर, डगर तकते बाबुल की।

दुख और सुख जीवन के दो पहलू हैं। व्यक्ति को जब अति दुःखों का सामना करना पड़ता है या अति सुखानुभूति होती है, तब उनके अतिरेक में उसकी आँखें बरबस टपकने लगती हैं–

पावस ये लगते कभी, कभी भिगोते नैन
मिलने की देकर खुशी, आकर देते चैन
आकर देते चैन, कभी बहते बन ममता
कभी छोड़ घरबार, कभी ये जोगी रमता
कभी चाँदनी रात, कभी लगते ज्यों मावस
कभी भिगोते नैन, खुशी में लगते पावस।

यदा–कदा बिना किसी कारण ,किसी के कथन अथवा संवाद हमारे मन को छू जाते हैं, हमारे जज़्बातों को एक दिशा देने का कार्य कर देते हैं। जो मरुभूमि में उपवन लगाने जैसा कर देते हैं–

चातक बन तरसें कभी, कभी बहें दिन रात

कभी कभी बिन बात ही छू जाते जज़्बात
छू जाते जज़्बात, बहें आँखों से अविरल
लेते मरुथल रूप, कभी ये करते जल थल
कभी कभी ये रौद्र, कभी बन जाते घातक
कभी बहें दिन रात, कभी तरसें बन चातक।

डॉ. नीरज ने अपने इस 'आँसू लावनी' काव्य-संग्रह में जीवन के उन तमाम पहलुओं को उकेरा है, जब –जब हमारी आँखें नम हो जाती हैं, जब–जब स्वतः उनसे आँसू बह निकलते हैं। कवयित्री ने उन सब संवेदनाओं को साथ लिया है, जो एकाएक हमारे अंदर जाग्रत हो जाती हैं, और न चाहते हुए भी हम संवेदनशील हो जाते हैं।

यह डॉ. नीरज की कल्पना एवं लेखनी की सफलता ही है कि उन्होंने अपने छंदों के द्वारा जीवन की उस दशा को भी रेखांकित किया है, जब व्यक्ति का मन संवेदना से भर जाता है, उसके होंठ कुछ कहना चाहते हैं, किन्तु चाह कर भी मूक ही रह जाते हैं और आँखें नम होकर सब कुछ कह देती हैं।

डॉ. नीरज के छंद भावात्मकता व रचनात्मकता की दृष्टि से तो सुंदर हैं ही, किन्तु डॉ. आर. के. तोमर के चित्रांकन ने उनमें चार चाँद लगा दिए हैं। डॉ. तोमर से मैं कई वर्षों से परिचित हूँ। वे मेरे बड़े अच्छे मित्रों में से हैं। उनकी इस सुंदर कला के लिए मैं यही कहूँगा.....

रचना के अनुकूल हैं, तोमर जी के चित्र
गलबहियाँ करते दिखें, बन शब्दों के मित्र
बन शब्दों के मित्र, कहें मिल साथ कहानी
कभी अश्रु अनमोल, कभी बस बहता पानी
रहकर भी ये दूर, छुएँ दिल को सजना के
चित्र सभी ज्यों मित्र, बनें इक इक रचना के।

अंत में, सम्माननीया कवयित्री डॉ. नीरज सुधांशु ने अपनी सार्थक रचनात्मकता के माध्यम से संग्रह में जीवन के उन तमाम पहलुओं को गिनाया है, जब हमारी संवेदनाएँ जाग जाती हैं, उनके वशीभूत आँखें नम हो जाती है, आँसू बहने लगते हैं। इस तरह के बिन्दु विशेष पर लेखक नें आने वाले नए रचनाकारों के लिए प्रेरणा का बहुत बड़ा कार्य किया है। डॉ. नीरज को उनकी इस कृति के लिए हार्दिक मंगल कामनाएँ प्रेषित करते हुए ये विश्वास करता हूँ कि इस कृति को उनकी पूर्व रचनाओं की भाँति सुहृद पाठकों एवं रचनाकारों, समीक्षकों का बहुत प्यार मिलेगा, वे संग्रह की रचनाओं को पढ़ते हुए आत्मसात करेंगे। शुभम्।

डॉ. अजय जनमेजय
417– रामबाग कॉलोनी
सिविल लाइन
बिजनौर–246701(उ.प्र)
मोः 09412215952

आत्म निवेदनः

हे ज्ञानदायिनी जगत माता व जन्मदात्री मेरी माँ! आज अश्रुपूरित नयनों से समर्पित है आपको ये अश्रुमाला। मन की धरती पर, अश्रुओं का सिंचन पा, अनायास ही प्रस्फुटित ,अंकुरित व पल्लवित होते गए अनेकों छंद। उसी भावावेग की पराकाष्ठा की अनमोल परिणिति प्रस्तुत है –'आँसू लावनी' के कलेवर में।

कर्म ही जीवन है; गीता का ये ज्ञान सनातन सत्य है प्रत्येक प्राणी के लिए। हाँ ! कर्म करने के कारण व उद्देश्य पृथक पृथक हो सकते हैं। कर्मप्रवृत्ति का एक महत् कारण आँसू भी तो है। कोई माने या न माने, कोई आँसुओं का कर्ज़ चुकाने के लिए, कोई आँसुओं का हिसाब लेने के लिए, कोई परिजनों की आँखों में आँसू न आने देने के लिए, कोई आँसू पोंछने के लिए तो कोई दूसरे को आँसुओं में डुबो देने के लिए कर्म में प्रवृत्त है।

हमारा शरीर एकादश इन्द्रियों का धारणकर्ता है व इन्हीं से सारे कर्म होते हैं। आँख, कान, नाक, जीभ व त्वचा, ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, पाद, पाणि, पायु, उपस्थ एवं वाक, ये पाँच कर्मेंद्रियाँ व इनकी कायजा (लगाम) रूपी मन ये ग्यारहवीं इन्द्रिय है। आँसुओं का इन सभी से प्रत्यक्ष संबंध है। इनमें से किसी को भी आघात पहुँचे तो मरहम लगाने चले आते हैं आँसू सबसे पहले।

प्रकृति में केवल आँसू ही ऐसी वस्तु है जिसे प्रत्येक विशेषण से सजाया जा सकता है। नवरस में से प्रत्येक रस इसे प्रतिबिम्बित करने में सक्षम है। कहते हैं ईश्वर को पाने की राह भी आँसुओं की नगरी से ही होकर गुज़रती है, मीराबाई के शब्दों में ''अँसुअन जल सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई'' प्रेम रूपी बेल को पल्लवित करने के लिए अश्रुजल से ही सिंचन करना पड़ता है। भाव–विभोर भक्त की भक्ति आँखों से छलक–छलक पड़ती है व मौन पुकार भी उस परम शक्ति तक पहुँच जाती है, वाणी की तो

आवश्यक्ता ही नहीं पड़ती। भक्त की अश्रुधारा रूपी सरिता ईश्वर रूपी सागर में समा जाती है। इस प्रकार मोक्ष का मार्ग भी दिखाते हैं आँसू।

इनमें जो अपनत्व का भाव झलकता है, वह भी अनन्य है। हँसता तो व्यक्ति हर किसी के सामने है, किन्तु आँसू की विशेषता है कि वे किसी विशेष–खास, अपने के सामने ही आते हैं।

शरीर की पोर पोर की पीड़ा हर ओर से खिंची चली आती है और नयनों से आँसू के रूप में बाहर निकल जाती है। पीड़ा को आराम मिल जाता है। पीड़ा की दवा हैं आँसू। शरीर व मन का तनाव कम करते हैं आँसू। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार एक नन्हें बालक का रोना भी तनावमुक्त होने की प्रक्रिया है। उसे रोने देना चाहिए, रोकना नहीं चाहिए। किन्तु हम प्रायः उसे खिलौना देकर बहलाकर रोने नहीं देते। इस प्रकार रोने की जो प्रक्रिया चल रही थी, वह थम जाती है, जो आँसू आने को तत्पर थे, वे रुक जाते हैं, हृदय हल्का होने की प्रक्रिया भी वहीं रुक जाती है और इसी रुकावट के कारण अंदर का तनाव धीरे–धीरे बढ़ता जाता है एवं विषस्वरूप हो जाता है, जो उसके जीवन में दुख का कारण बनता है, उदासी का कारण बनता है। अतः उस विष को इकठ्ठा न होने दें। आँसू के रूप में बाहर आ जाने पर व्यक्ति तनावमुक्त व हल्का हो जाता है। इस प्रकार जीवन में रोना अत्यंत आवश्यक है। आँसुओं के साथ अंदर का तनाव, शोक, हर्ष, क्रोध जैसी दबी संवेदनाएँ भी बाहर आ जाती हैं एवं मन व शरीर हल्का प्रतीत होता है।

स्क्रीम थेरेपी के अनुसार भी किसी मनोरोगी को ठीक करने के लिए उसे रुलाना अत्यंत आवश्यक है व रोना भी ऐसा कि रोम–रोम चीत्कार कर उठे । पोर–पोर से रुदन निकले। रुदन के साथ–साथ तन–मन की सारी नकारात्मकता निकल कर, सकारात्मकता का संचार होता है। ऐसे अनुभव तो हम सभी ने अपने जीवन में अवश्य किए होंगे। इन्हीं सारी भावनाओं व सोच ने मुझे आँसू लिखने की प्रेरणा दी।

अपने आस पास के विषयों से रूबरू होती रही व छंदों में पिरोती रही। किसी भी साहित्य या कवि की कल्पना का बीज अपने परिवेश में , अपने आस पास के वातावरण में ही समाया होता है एवं समय आने पर खाद–पानी पाते ही अंकुरित, प्रस्फुटित हो जाता है। यही मेरे आँसुओं की भी प्रसव प्रक्रिया है।

जब मुझे दो–चार आँसू रूपी मोती मिले, तो मैंने झट से इसे माला में पिरोना शुरु किया एवं आज इधर–उधर बिखरे मोती समेटते–समेटते, पिरोते–पिरोते माला कितनी लम्बी हो गई है! इसकी मैंने स्वयं ने भी कल्पना नहीं की थी। शुरू में 36–छंद लिखे गए। फिर कुछ विराम–सा आ गया। पिछले वर्ष इसमें फिर कुछ वृद्धि हुई तो संख्या 52 पर पहुँची। किन्तु पिछले तीन माह में लेखनी पर ऐसी रवानी छाई कि लिखते लिखते 111 छंद बन पड़े।

कुछ मेरे ,कुछ इसके, कुछ उसके व सबके मिलाकर आँसुओं का उदधि हिल्लोरें ले रहा है व लहर बनकर सबके मन को छूने की कोशिश में हैं। अब ये पाठकों के आधीन है कि वास्तव में वह उनके मन को छू पाया है कि नहीं। हर संवेदनशील मन दूसरे के आँसुओं के साथ आँसू बहाने लगता है। छंद लिखते हुए कई बार मैं भी इस प्रक्रिया से रूबरू हुई हूँ। परमपिता परमेश्वर को नमन करती हूँ, जिन्होंने मुझमें इतनी शक्ति का संचार किया, कि मैं अपने व्यस्त दैनिक क्रिया–कलापों में से कुछ क्षण चुरा कर अपने मनोभावों को छंदों में ढ़ाल सकी व पाठकों के पठन के लिए प्रस्तुत कर सकी।

अब कुछ संक्षेप में अपने बारे में– पढ़ने–लिखने का शौक तो मुझे बचपन से ही रहा है। घर में भी उचित माहौल था। मेरी आदरणीया माँ भी मुझे प्रोत्साहित करती रहती थीं। वे स्वयं एक शिक्षिका,अच्छी लेखिका व कवियित्री थीं। हिन्दी भी उनके अध्यापन के अन्य विषयों में से एक था। अतः व्याकरण का ज्ञान भी मुझे उनसे मिलता रहा। मेरी अन्य अधिकतर कविताएँ भी छंदबद्ध ही हैं। उनके मार्गदर्शन से धीरे–धीरे समय के साथ मेरे लेखन

में परिपक्वता आती चली गई। अनेक संकलनों में कुछ कुछ कविताएँ प्रकाशित होती रहीं। स्वास्थ्य से संबंधित लेख व व्यंग्य आलेख भी अनेकों राष्ट्रीय व क्षेत्रीय पत्र–पत्रिकाओं में वर्षों से स्थान पाते रहे हैं; किन्तु अपनी निजी कहने को कोई पुस्तक नहीं थीं, यह मेरी प्रकाशित प्रथम पुस्तक है। और भी कई पुस्तकें प्रकाशन की पंक्ति में हैं। आकाशवाणी नजीबाबाद से नियमित रूप से स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर वार्ताएँ भी प्रसारित होती रहती हैं।

जब मैंने आँसू–छंदों को पुस्तक में संजोकर प्रकाशन का निर्णय लिया, तो मेरी उत्कट इच्छा थी, कि हर छंद के साथ उसका चित्रांकन भी हो,और मेरी इस इच्छा को हमारे अनुजवत्, पारिवारिक मित्र डॉ. राम कुमार तोमर जी ने पूर्ण किया। हमारे आग्रह को उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने के बावजूद भी सहर्ष व तुरंत स्वीकार किया व समयबद्धता के साथ इस कार्य को पूर्ण भी कर दिया। चित्रों के कारण छंदों की गरिमा में अनेकशः वृद्धि हुई है। उनकी सुंदर कला के लिए उनको साधुवाद। अपनी मनमोहक कलाकृतियों से मेरी पुस्तक को सजाने के लिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। पुस्तक के मुखपृष्ठ के छायांकन के लिए भी मैं उनका कोटि–कोटि आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरे पिता श्री भूपेन्द्रनाथ शर्मा व माता स्व. श्रीमती ललिता शर्मा का आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। उन्होंने ही मुझे इस लायक बनाया व बचपन से अच्छे संस्कार डालकर व्यक्तित्व को निखारा, जिससे आज मैं इस कार्य में सफल हुई हूँ। अपनी पुस्तक उन्हें भावुकतापूर्वक समर्पित करते हुए, आज मैं गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। ईश्वर हर जन्म में उनकी संतान के रूप में मुझे धरती पर लाए। मेरी काव्य–साधना को निखारने का श्रेय मेरे माता–पिता के साथ–साथ कॉलेज में मेरे गुरू रहे पूजनीय वैद्य श्री कृष्ण मोहन शर्मा जी को जाता है। उन्होंने पढ़ाई के साथ–साथ हम विद्यार्थियों की अन्य विशेषताओं को भी जाना–पहचाना व हमारे सर्वांगीण विकास हेतु समय–समय पर हमारा

मार्गदर्शन भी किया। मेरे आग्रह पर उन्होंने इस पुस्तक के लिए मुझे आशीर्वचन व शुभकामनाएँ दीं हैं उसके लिए मैं उनके चरण–स्पर्श सहित आभार व्यक्त करती हूँ।

मुझे बचपन से ही प्रसिद्ध एवं महान कवि श्री गोपाल दास नीरज जी की कविताओं ने बहुत प्रभावित किया है; मैं स्कूल में विभिन्न कार्यक्रमों में उनकी कविताएँ गाकर अनेक पुरस्कार प्राप्त किया करती थी। बचपन की छाप व्यक्ति के जीवन को ताउम्र प्रभावित करती है। बचपन से ही मेरी अभिलाषा थी कि मेरी प्रथम प्रकाशित पुस्तक को यदि उनका आशीर्वाद मिल जाए, तो मेरी आराधना सफल हो जाएगी। इतने वर्षों के बाद आज जब मुझे अवसर मिला, तो मैंने उनसे फोन पर संपर्क साधा और उन्होंने बिना किसी प्रश्नचिन्ह के, अपने अनेकों व्यस्ततम कार्यक्रमों के उपरांत भी, तुरंत मिलने का समय दे दिया। वहाँ जाकर मैंने उनसे अपनी पुस्तक के लिए आशीर्वचन देने का आग्रह किया तो उन्होंने बड़े चाव के साथ सारे छंद सुने एवं छंदों की प्रशंसा दाद देते हुए की। उन्होंने मुझसे मेरी अन्य कविताएँ व ग़ज़लें भी तन्मयता के साथ सुनीं। उनकी दाद व वाह–वाही से मुझे अत्यंत गर्व का अनुभव हो रहा था। सारे छंद सुनने के बाद उन्होंने अपने सहायक को बुलाया एवं स्वयं बोलकर पुस्तक के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए व सहायक से लिखवाए, फिर स्वयं हस्ताक्षर किए। मेरा बचपन का ये सपना पूरा करने व अपने अमूल्य आशीर्वचन देने लिए मैं उनका हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए अपने आप को धन्य समझती हूँ।

इसी क्रम में हमारे शहर बिजनौर के बाल कवि व ग़ज़लकार के रूप में प्रसिद्ध कवि डॉ. अजय जनमेजय जी ने भी मेरा आग्रह सहर्ष स्वीकार किया एवं अपनी अनोखी शैली में कुण्डलियों के माध्यम से पुस्तक के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए। मैं उनका हृदय से धन्यवाद करती हूँ।

घर में उपयुक्त वातावरण व सहयोग न मिले तो कोई भी कार्य करना बहुत ही कठिन होता है। समय समय पर मेरी रचनाएँ सुनने, उन पर समालोचनायुक्त वक्तव्य देने व मुझे प्रोत्साहित करने के लिए मैं अपने पति

डॉ. सुधांशु शर्मा जी का दिल से शब्दातीत आभार व्यक्त करती हूँ। मेरे ज्येष्ठ पुत्र प्रिय अंशुल, पुत्रवधु प्रिय पल्लवीऋचा व कनिष्ठ पुत्र अंकुर की भी मुझमें सतत उत्साह का संचार करने के लिए ऋणी रहूँगी व उन्हें दिल की गहराइयों से शुभाशीर्वाद देती हूँ। मेरी नन्हीं सी, प्यारी सी पोती की नटखट हरकतों ने भी कई छंद लिखवा लिए हैं। ईश्वर उसे चिरायु करें।

पुस्तक को आकर्षक रूप में प्रकाशित करने के लिए वनिका पब्लिकेशन्स को साधुवाद। पुस्तक को सुंदर कलेवर में सजाने व प्रिंट करने के लिए न्यूटैक ग्राफिक्स, जयपुर व अपने छोटे भाई पुनीत कुमार शर्मा की दिल से आभारी हूँ। पांडुलिपि तैयार करने व टाईप इत्यादि के काम में मदद के लिए मैं अंकित कुमार की आभारी हूँ।

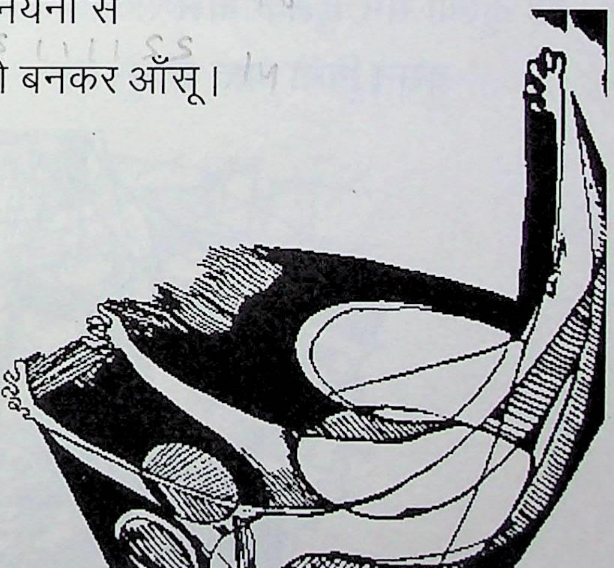
पाठकवृन्द से विशेष आग्रह :

प्रसिद्ध कवि श्री दिनकर जी के अनुसार : ''हम सीधे हाथ से काम करते हैं, जब लिखते–लिखते हाथ थक जाता है तब हम कभी–कभी बाँए हाथ का भी प्रयोग कर लेते हैं, बाँए हाथ से अधिक अभ्यस्त न होने के कारण, कुछ त्रुटियाँ रह जाती हैं।'' वैसे भी हम सर्व संपूर्ण नहीं हो सकते, अतः इस पुस्तक में भी त्रुटियाँ अवश्य होंगी। मैंने प्रयास तो किया है, किन्तु यदि किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि रह गई हो, तो पाठकगण मुझे क्षमा करें। यदि त्रुटियों से अवगत कराना चाहें तो उनका सहर्ष स्वागत है। त्रुटियों के साथ साथ पुस्तक के विषय में अपने अमूल्य विचार व प्रतिक्रियाएँ प्रेषित कर मुझे कृतार्थ करें।

पुनः 'आँसू लावनी' सुधि पाठकों के दिलों को स्पर्श करने में सफल होगी, इस आशा के साथ मेरी यह अमूल्य निधि आपके समक्ष प्रस्तुत है।

डॉ नीरज सुधांशु

तन की पीड़ा, मन की पीड़ा
　　व्यक्त करे, जब हर आँसू।
मन की बात कहें, भावों की
　　अविरल नद, बनकर आँसू
घनीभूत हो जाती पीड़ा
　　रोम–रोम में जब संचित
केशाकर्षित हो नयनों से
　　बह जाती बनकर आँसू।



जैसी व्यथा, भाव की वैसी
अभिव्यक्ति पाते आँसू।
भीगी पलकें, रक्तिम नैना
बहकर हो जाते आँसू।
अधर फड़कते, रुँधे गले में
शब्द रुके रह जाते हैं
बह कुल्या सम, ढुलक गाल से
वसन भिगो जाते आँसू।



हाव भाव बिन मन की बातें
आँखों से लाते आँसू।
बन साहित्य जगत के भूषण
कला दिखा जाते आँसू।
रस श्रृंगार, हास्य हो अद्भुत
वीर, रौद्र, वीभत्स, करुण
शान्त, भयानक की अभिव्यक्ति
पल में कर जाते आँसू।



चुरा सके न चोर कोई है
अमोल धन बहते आँसू।
एक छिद्र सम बनी तिजोरी
में अनगिन रहते आँसू।
इन पर तो एकाधिकार है
केवल अंतर्मन का ही
वह चाहे संचित रहते हैं
चाहे तो बहते आँसू।



हो आघात अगर तो छलनी
मन करते हरदम आँसू।
इनसे बात छिपे ना कोई
दरपन से ना कम आँसू।
शुष्क मनस का तर्पण करते
भावशून्य जब वह होता
मन की पीड़ा हरते मन के
घावों पर मरहम आँसू।



इस दौलत से रहित न कोई
पास रहें सबके आँसू।
जीवन का अनमोल खज़ाना
कितने ही टपके आँसू।
ऊँच–नीच से परे रहें ये
धनी हो कि निर्धन कोई
बहें नयनसुख सूरदास के
इक जैसे सबके आँसू।



आँसू लावनी

कवि की कविता बन कागज़ पर
भावसहित बहते आँसू।
भाव हृदय के गूढ़, छंद की
माला बन, कहते आँसू।
चली लेखनी अविरल जब भी
हृदय व्यथा कवि की भारी
बाँध तोड़, रंगते, मसि बनकर
पृष्ठों को बहते आँसू।



कभी कल्पना बनकर कवि की
गज़लों में छाते आँसू।
मिलन– विरह के गलियारों में
गीत ग़ज़ल गाते आँसू।
गीतों के ताने–बाने में
इनका ही लगता धागा
मन की गहराई को छूकर
टपक–टपक जाते आँसू।



बिन माँगे जब खुशी मिले तो
छलकें दीवाने आँसू।
दिल में कितना दर्द छिपा है
उसके पैमाने आँसू।
भावों का अतिरेक अगर हो
सब्र नहीं कर पाते हैं
भावों की बाती पर वारी –
वारी परवाने आँसू।



बैठे–बैठे ही आ जाते
आँखों में अक्सर आँसू।
तरह–तरह के दिल में उठते
जज़्बातों का घर आँसू।
शख़्स नहीं कोई ऐसा इस
दुनिया में होगा शायद
कभी नहीं उमड़े हों जिसके
नैननकोरों पर आँसू।



जीवन के झंझावातों में
बन दीवार खड़े आँसू।
लाचारी पर, कभी कभी तो
खुद से खूब लड़े आँसू।
अंत समय तक करे सामना
हार नहीं वो माने है
साँस खींचकर, मुठ्ठी ताने
कर ले नैन कड़े आँसू।



कभी रुदन की अति होने पर
आँखों के सूखे आँसू।
चाहो तो भी ना आ पाते
ढ़ीठ बने रूखे आँसू।
अति तो किसी हाल में भी हो
अच्छी नहीं कही जाती
ममता, प्यार, दुलार, मनावन
इनके हैं भूखे आँसू।



ठहर पलक पर प्रतिबिंबों की
लगते हैं गागर आँसू।
पनियाली पलकों पर नाचें
जैसे नटनागर आँसू।
नज़र जहाँ तक भी जाती है
धुंधला–धुंधला दिखता है
पलकों की अलकों में रहते
करुणा के सागर आँसू।



जैसी जहाँ ज़रूरत वैसा
समय देख हो लें आँसू।
कभी सियासत, कभी नफासत
से पोलें खोले आँसू।
सरकारी हथियार बनें ये
हड़ताली गतिविधियों में
तितर–बितर उनको करते बन
गैसों के गोले आँसू।



ढ़ोंगी मक्कारी के हाथों
कठपुतली बनते आँसू।
सीधे–सादे लोगों को यूँ
नच करके ठगते आँसू।
खेल–खेल में जाने कितने
चूल्हों पर पानी फिरता
सब कुछ लुट जाता बस बाकी
रह जाते बहते आँसू।



गर आँखों पर जुल्म करोगे
बरसेंगे झट से आँसू।
इकटक कम्प्यूटर ताकोगे
टपकेंगे पट से आँसू।
नाजुक से होते हैं नैना
इनका जतन ज़रूरी है
बहें अन्यथा भर–भर पीड़ित
नयनों के घट से आँसू।



पी की मीठी याद सताती
ले आती नमके आँसू।
कितना ही रोका ना माने
फिर भी आ धमके आँसू।
याद और आँसू आपस में
सिक्के के दो पहलू हैं
पाती पाकर, पिया मिलन की
आशा में चमके आँसू।



आँसू लावनी

नौजवान आँखों में उगते
सपन सजा लेते आँसू।
ऊपर बस ऊपर उठना है
भाव जगा देते आँसू।
ताकत बन आँखों का पानी
मंज़िल तक पहुँचाता है
कर्मठ मानव का संबल बन
राह दिखा देते आँसू।



ग़म से सूनी अखियों में फिर
पावस बन आते आँसू।
और खुशी में भिगो नयन को
पागल कर जाते आँसू।
नेत्र रोग से पीड़ित हों या
कभी प्रभावित मौसम से
झट से बहकर झर–झर नयना
पावन कर जाते आँसू।



आँसू लावनी

मौन मूक संदेश पिया को
निशदिन भिजवाते आँसू।
भीगी पाती देख पिया के
नैन भिगो जाते आँसू।
भिगो कंचुकी बहें अनवरत
गंगा–जमना की धारा
किसी विरहिणी के काजल सम
कर कपोल जाते आँसू।



शिक्वे गिले प्रियतम से सारे
कह जाएँ बहते आँसू।
वाणी रहती मूक मूक बस
बहते ही रहते आँसू।
मन के सारे भाव प्रदर्शित
सुख के हों या हों दुख के
पलक भिगो पलभर में कैसे
करते हैं बहते आँसू।



पीड़ा झेला करती नारी
बहा–बहा कर जब आँसू।
प्रसव समय के साथी बनते
ममता के ही तब आँसू।
नन्हें शिशु की सुन किलकारी
पीड़ा सारी खो जाती
जनम दूसरा पाकर माता
तुरत पोंछती सब आँसू।



ये अचूक बन अस्त्र त्रिया के
सदा विजेता हैं आँसू।
मौका पाकर रूप बदलते
कुछ अभिनेता हैं आँसू।
हास्य–रुदन सब इनके वश में
ये जादू की एक छड़ी
देते भावव्यंजना को गति
कुशल प्रणेता हैं आँसू।



आँसू लावनी

प्रेम पगे, रोमांचित दिल की
एक जुबानी हैं आँसू।
पी से बिछड़ी अँखियों की ही
मेहरबानी हैं आँसू।
दिल के अंतर से निकले अन–
–मोल ग़ज़ल गीतों के भी
जग में कोई हो या ना हो
दिलबरजानी हैं आँसू।

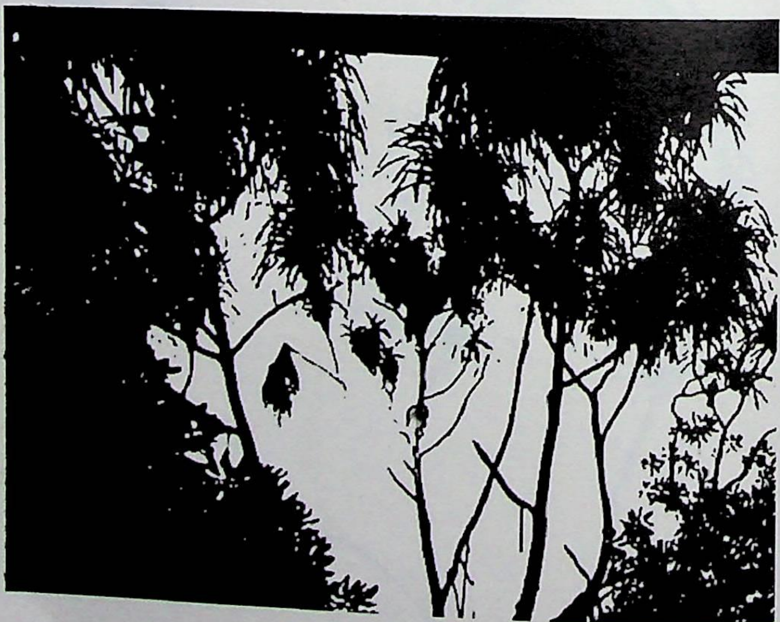


रहे गर्भ में भ्रूण, सुना है
उसके भी रोते आँसू।
सुख दुख की गतिविधियों से, उस–
के परिचित होते आँसू।
कन्या भ्रूण अगर साबित हो
हत्या कर दी जाती है
माँ की पीड़ा से उसकी भी
आँखों में होते आँसू।

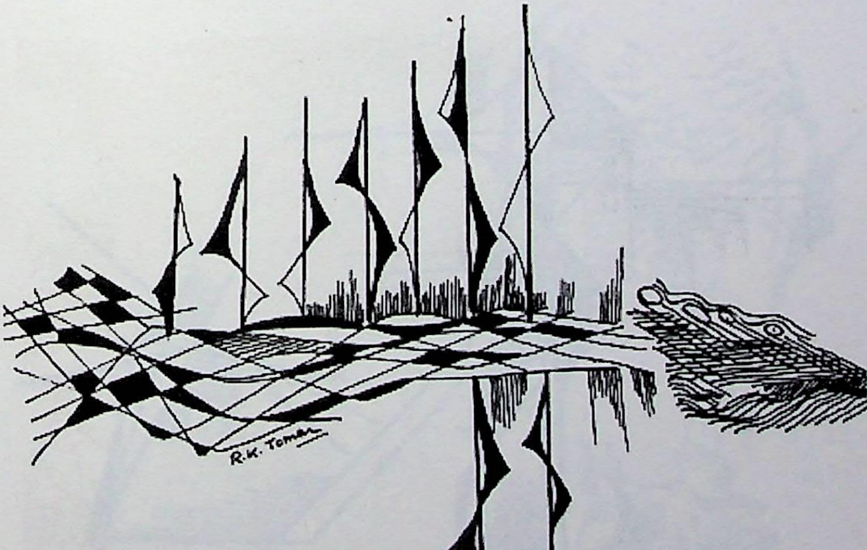


आँसू लावनी

अचल चलित जीवों की थाती
बन हरदम रहते आँसू।
हरे भरे वृक्षों की पीड़ा
व्यक्त किया करते आँसू।
शिशिर ऋतु में ठिठुरा करते
शीताकुल हो तृण–पादप
मौन–मौन उनकी पीड़ा के
मोती बन झरते आँसू।

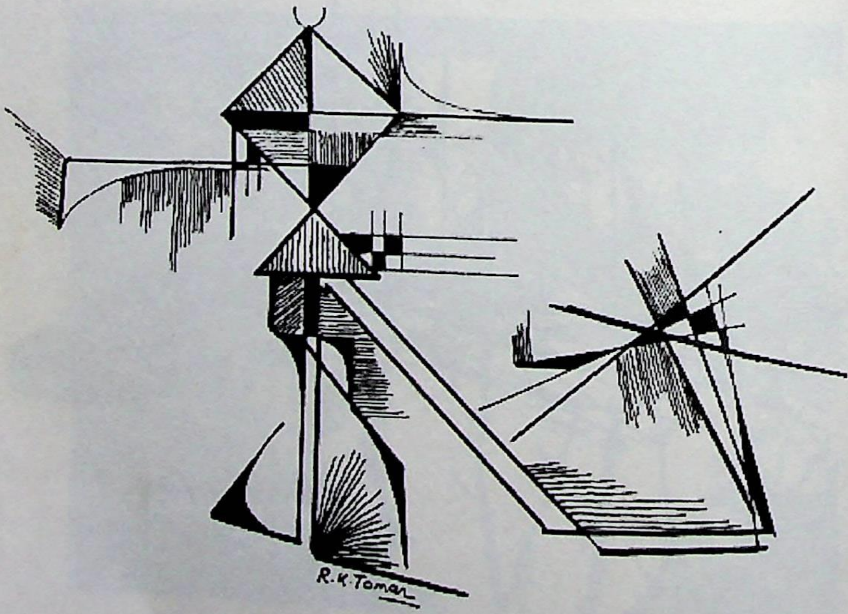


कुदरत की आँखों में, भक्षक
बन, लाते पातक, आँसू।
नयन भरे, स्वाती की बूँदों
को तरसें चातक आँसू।
बाढ़, अकाल, रोग विपदाएँ
जंगल कटने से आतीं
चोट न वृक्षों को पहुँचाना
इनके हैं घातक आँसू।



आँसू लावनी

तीव्र भानु की उष्मा पाकर
वाष्पित जलधि के आँसू।
नील गगन में जा, पयोद का
रूप धरें फिर वे आँसू।
भटक–भटक नभ में थक जाते
राह थकनवश भूल कहीं
जा टकराते क्रूर शैल से
और बरस पड़ते आँसू।

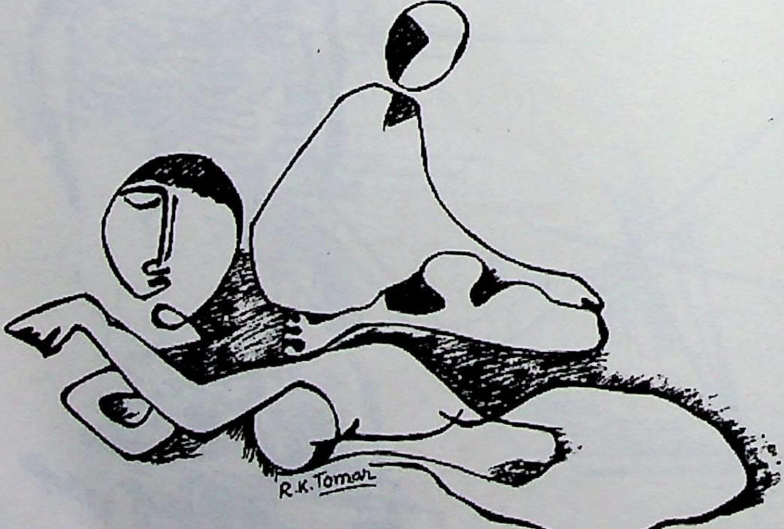


जिनके पास न भाषा बोली
पीड़ा कह पाएँ आँसू।
जिनकी बोली समझ न आए
भाषा समझाएँ आँसू।
पशु, पंखी, थलचर, जलचर, नभ
में विचरण करने वाले
हर प्राणी की बात सहज ही
बहकर कह जाएँ आँसू।



आँसू लावनी

क्षुधित, तृषित हो नन्हा शिशु जब
कहें कहानी हैं आँसू।
शीत–उष्ण से गर हो भावित
समझें, ज्ञानी हैं आँसू।
अपने सारे दुख व दर्द माँ
को रोकर बतलाते हैं
हाव– भाव से जता न पाएँ
शिशु की बानी हैं आँसू।



पूजा करते अंतर्मन से,
भावसहित जिनके आँसू।
बनकर अविरल धारा बहते
श्री चरणों में वे आँसू।
ऐसी देख तपस्या, नभ से
उतर, धरा पर वे आते
होकर विवश, स्वयं तब प्रभुवर
पोंछें भक्तों के आँसू।



आँसू लावनी

सखा सुदामा से मिलने जब
नयनों में लेकर आँसू।
सुखद मिलन, आलिंगन बहते
नयनों से झर–झर आँसू।
प्रेम विवश, कृष्णा के नयना
बरसे, चरण सुदामा पर
मानो जैसे धन्य हो गए
पग प्रक्षालित कर आँसू।



कृष्ण विरह में गोपी, राधा,
ग्वालों के बहते आँसू।
द्वार निरखतीं, पीड़ विरह की,
गैयों के कहते आँसू।
तरूवर, पशु, पक्षी, घर–आँगन
यमुना तट श्री हीन हुए
कान्हा लौटा दो, ऊधो से,
विनती कर कहते आँसू।



पाया जब वनंवास राम ने
रहे सखा बनकर आँसू।
छल से हरण किया रावण ने
सीता के बहकर आँसू।
राम! राम! बस राम पुकारें
मोती से गिर धरती पर
और सघन वन राम ढूँढ़ते
नयनों में भरकर आँसू।



साधन बन, हर व्यथा कथा को
चतुयुग में कहते आँसू।
है इतिहास गवाह सदा ही
हर युग में रहते आँसू।
सतयुग एक सुनहरा युग था
त्रेता, द्वापर में क्रमशः
बढ़ते दुख के साथ बढ़ रहे
कलियुग में बहते आँसू।



आँसू लावनी

जीवन का हैं सत्य सनातन
जग पीड़ा सहते आँसू।
शिव हैं, सुंदर हैं, जगती में
आँसू ही बहते आँसू।
पाप–पुण्य सब यहाँ समाहित
सदा रहा ही करते हैं
जन्म हुआ जगती का जबसे
प्रलय तलक रहते आँसू।



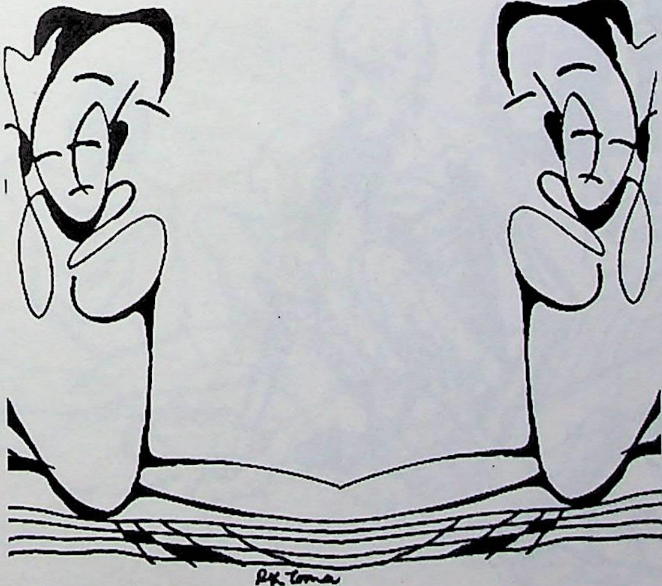
प्रलय देखकर, मनु के,हिमगिरि
पर बैठे, बहते आँसू।
सूझ रही थी राह न कोई
रहे पीर सहते आँसू।
कोलाहल था मचा चतुर्दिक
नज़र नहीं कुछ आता था
देखा जब श्रद्धा को, मनु ने
मुस्काए बहते आँसू।



भस्म काम करने, भोले के,
बनकर क्रोध प्रलय आँसू।
स्वामी की भस्मी काया लख
रति के दुखित हृदय आँसू।
बिलख–बिलख कर बहे, विवश शिव
ने फिर प्राण दिए लौटा
देखो, इनमें कितनी ताकत ,
कर दें क्रोध विलय आँसू।



मात–पिता के, खोकर श्रवण
को ,बहते जाते आँसू।
पुत्रमोह में ,दशरथ को फिर,
शापित करवाते आँसू।
कितना ही पाषाणी दिल हो,
क्रूर हृदय नर हो, तब भी
अपनी ऊष्मा से, पाषाणों
को भी, पिघलाते आँसू।



लूले –लंगड़े, कोढ़ी जन के
बहकर, पीर सहे आँसू।
देखा शव के साथ, राम का,
लेकर नाम, बहे आँसू।
हुई विरक्ति, तब सिद्धार्थ तपे ,
निखरे बनकर फिर गौतम
बोधतत्व का ज्ञान हुआ जब
अंतर्मुखी भए आँसू।

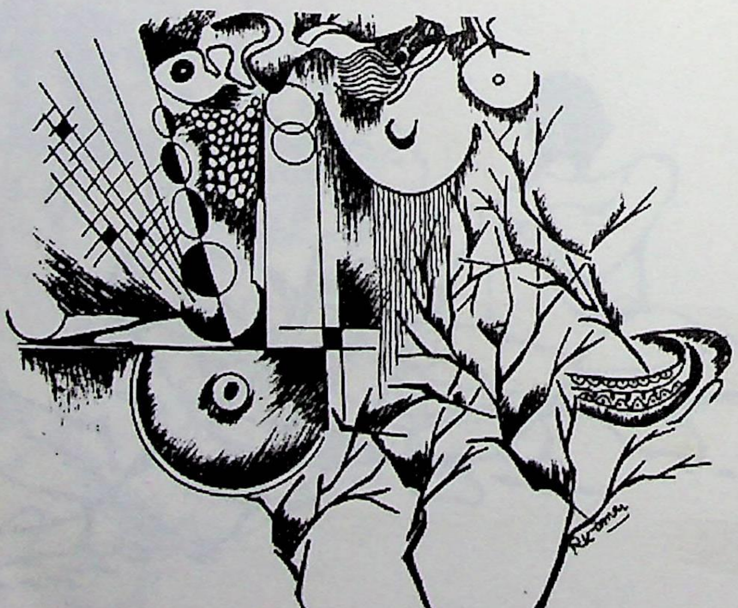


युद्धभूमि में बहकर, चेते,
राजा के विचलित आँसू।
अनगिन भट होकर हलाल जब
बहे अगिन परिचित आँसू।
जीवन का तब मर्म समझ में
फिर अशोक को भी आया
शपथ युद्ध ना करने की ले
करते प्रायश्चित आँसू।



आँसू लावनी

प्यासी धरती माता माँगे
जल, नयनों में भर आँसू।
दया न करूणा आती मन में
क्यों भगवन लखकर आँसू ?
शुष्क हुए तृण, विटप, नदीतट
विकल भई जगती सारी
नयन खोलकर देखो, शायद,
बरस पड़ें झर-झर आँसू।



बोकर बीज, कृषक के जलहित,
शून्य नभस तकते आँसू।
उमड़—घुमड़ कर, नीर बहाकर,
जलद मान रखते आँसू।
जब अकाल की बेला में, नित
टूटे आस, बिना जल के
देकर श्राप, शुष्क सरिता में ,
ला उफान सकते आँसू।

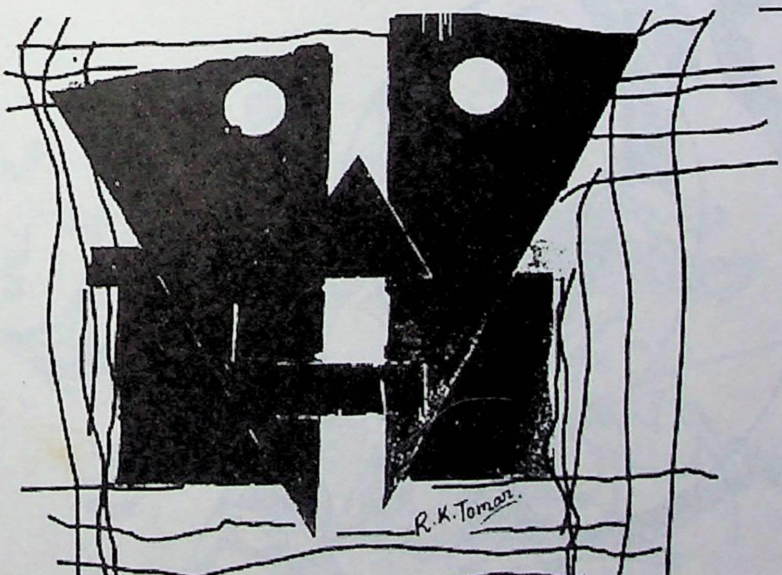


पुत्रशोक में, मन को हलका,
माता के करते आँसू।
राह तके भ्राता की कोई
भगिनी के बहते आँसू।
ले कहार काँधों पर डोली
चलें सुबकती तनया की
पीछे, रह जाते हैं प्रियजन,
मात–पिता ,बहते आँसू।

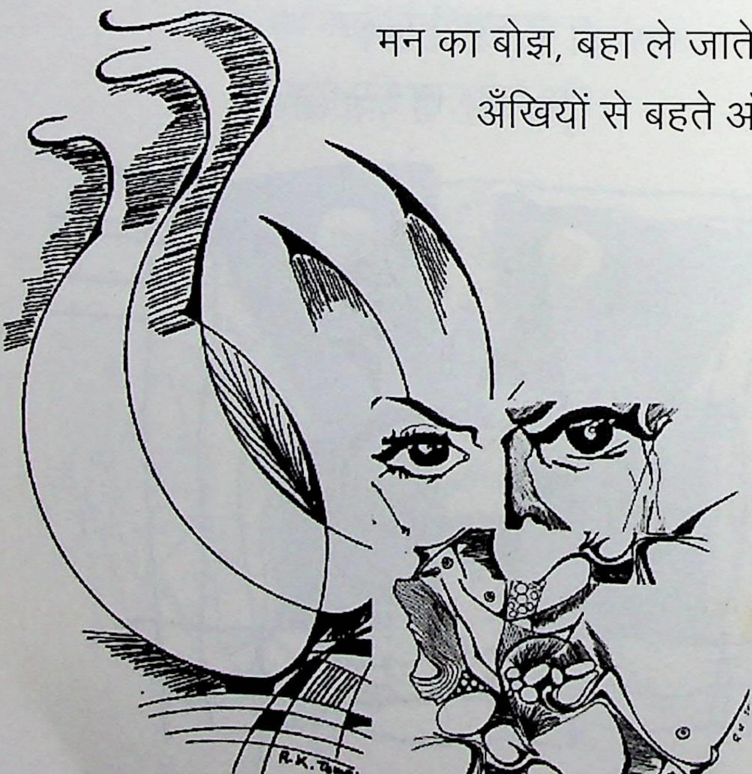


आँसू लावनी

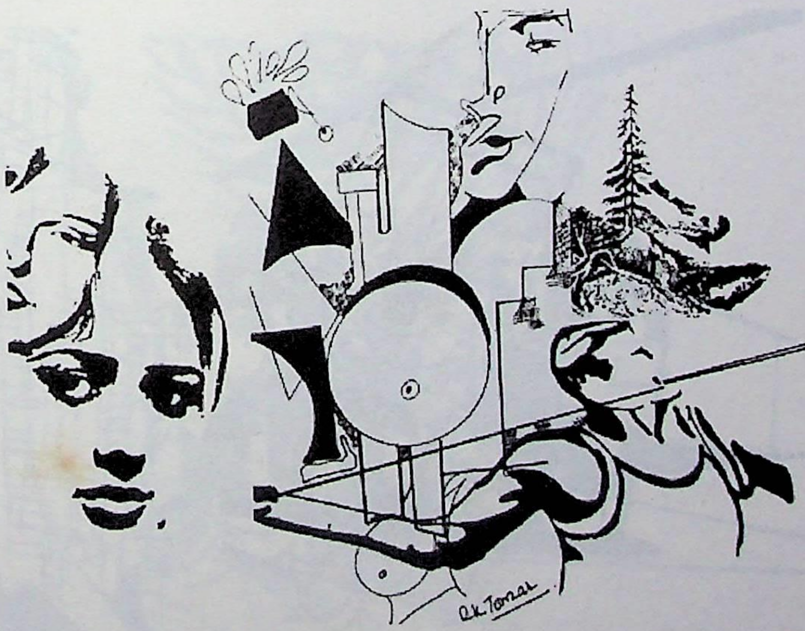
घर की चार दिवारी में ही
जिनके रह जाते आँसू।
सिसक– सिसक, कम्पित दीवारों
से, जब टकराते आँसू।
अंदर ही अंदर घुटते हैं,
व्यथा नहीं कह पाते हैं
अच्छे ही होते हैं वे जन
दुख सह, पी पाते आँसू।



इनको दामन मिल जाए तो,
थम जाते, बहते आँसू।
वर्ना, उमड़ –उमड़ पड़ते हैं
बाँध तोड़ ढ़हते आँसू।
सारी पीड़ा, व्यथा बहाकर
पल में हलका कर देते
मन का बोझ, बहा ले जाते
अँखियों से बहते आँसू।



कभी गुलामी की बेड़ी में,
थे करपाद, थके आँसू।
थे गवाह, हर नौजवान औ'
बूढ़े, बचपन के आँसू।
लुटी हमारी माँ–बहनों ने
कितने ही खोए जीवन
पिता, पुत्र, पति, भाई खोकर
सदियों अगन पके आँसू।



ऐसी आई बाढ़ कि सगरे
एक जगह मिल के आँसू।
बना उदधि हिल्लोरें लेकर
पराधीन जन के आँसू।
हिन्दू , मुस्लिम, सिख, ईसाई
का मतभेद भुलाकर के
करते आह्वाहन दम लेंगें,
मुक्ति पा कर के आँसू।



आज मगरमच्छी बहते हैं
देखो नेता के आँसू।
खूब फलें फूलें ये जग में
झूठी ममता के आँसू।
कलियुग में हैं ऐसे राक्षस
जिनपे इनका असर नहीं
इनके मिस हैं मय का प्याला
निर्धन जनता के आँसू।



आँसू लावनी

जनता के संग दुख में इनके
राजनीति करते आँसू।
नेता सुख सब छीन नयन में
जनता के भरते आँसू।
कोई विपदा आन पड़े जब
बाढ़ हो कि भूकंप कहीं
इनकी चाँदी ही चाँदी है
जनता के झरते आँसू।



दर्द भरे, ज़ख्मों के मारे ,
दिल के नाले हैं आँसू।
विरहा की अग्नि में जलते
दिल के छाले हैं आँसू।
ऐसा ना हो दिल के गहरे
ज़ख्म कहीं नासूर बनें
इसीलिए तो इन आँखों ने
कब से पाले हैं आँसू।

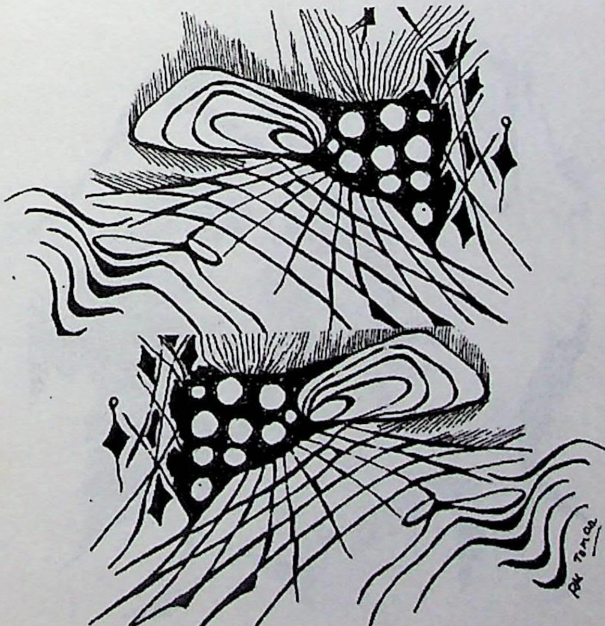


आँसू लावनी

सागर में सीपों के जैसे
आँखों के मोती आँसू।
भावों की धरती पर आँखें
सुख दुख में बोती आँसू।
अविरल धारा बहने पर भी
कभी नहीं रीती होतीं
चाहे कुछ हो जाए अँखियाँ
कभी नहीं खोती आँसू।



सूनी, विरहिन, सर्द निशा के
बरसें ,बन शबनम आँसू।
नभ से टूटे हीरे मोती
जैसे बिखरें नम आँसू।
सारी जगती जब सो जाती
रात अकेली रह जाती
तनहा शब का साथ निभाने
आ जाते हमदम आँसू।



आँसू लावनी

पिया मिलन की आस लगाएँ
गिन–गिन कर घड़ियाँ आँसू।
और पिया को लगें अमोलक
मोती की लड़ियाँ आँसू।
दिल के भाव, नयन, आँसू का
जनम– जनम का नाता है
भाव मनोगत और नयन बिच
बनते हैं कड़ियाँ आँसू।



सुख में झर–झर बहते हैं तो
लगते हैं प्यारे आँसू।
आते–आते कभी ठहरते
पलकों के द्वारे आँसू।
इस नैमत का मालिक तो इस
जगती का हर प्राणी है,
इसीलिए तो कहलाते हैं
दुनिया में न्यारे आँसू।



नभ के जैसे टिमटिम करते
आँखों के तारे आँसू।
तरह–तरह के चित्र बनाते
हैं कारे–कारे आँसू।।
आँखें देकर रब ने दूजा
आँसू का वरदान दिया,
सब कुछ सहने की क्षमता है
पर ग़म से हारे आँसू।



क्रोधित मन के अंगारों से
अँखियाँ गरमाते आँसू।
देख अचानक उनको सम्मुख,
पगले, शरमाते आँसू।
इनकी भी है, अजब कहानी
कभी ,कहीं भी, आ जाते,
नवरस पर अधिकार जमाकर
मन को भरमाते आँसू।



मन को हलका कर देते पर
मन पर भारी हैं आँसू।
वैसे तो कहलाते नर हैं
मन से नारी हैं आँसू।
कितना पुचकारो थमने का
लेकिन नाम नहीं लेते,
लगते जैसे द्रुपद सुता की
लम्बी सारी हैं आँसू।

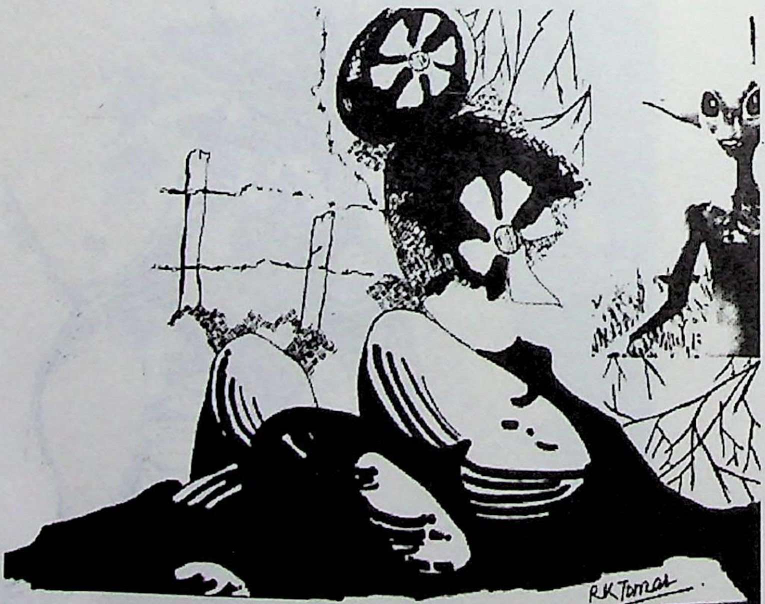


तन सूखा कांटा कर देते
        भीतर तक डसकर आँसू।
भावों की कुंडली बनाते
        नागपाश कसकर आँसू।
दुःसह दर्द नहीं सह पाता
        मन, तो ऐसा लगता है
अंगद–पाँव जमा लेते हैं
        नयनों में बसकर आँसू।

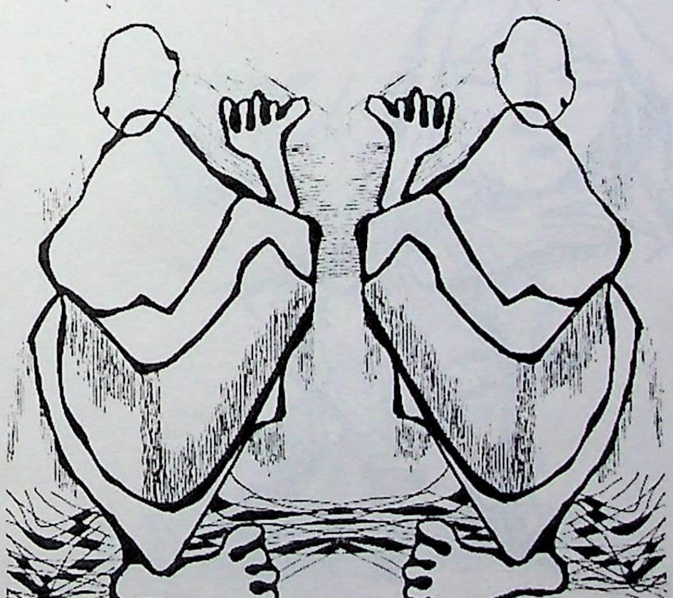


आँसू लावनी

बात बात पर पड़े ढुलकना
ऐसा कब चाहे आँसू।
मन भी दुविधा में रहता जब
आते अनचाहे आँसू।
किन्तु इशारा इक मिल जाता
है जब मन की आँखों का
इतरा–इतरा कर, इठलाते
आते , मनचाहे आँसू।



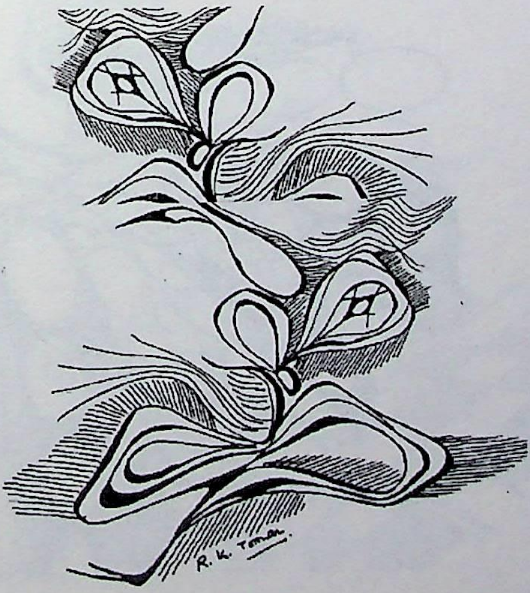
इक दूजे से हमदर्दी का
भी नाता जोड़ें आँसू।
संबल बनते कभी, कभी तो
हिम्मत भी तोड़ें आँसू।
दर्द बाँटने से कम होता
सत्य बात, ये ना मानें
छुप–छुप सरते, बातों का चुप–
के से रुख मोड़ें आँसू।



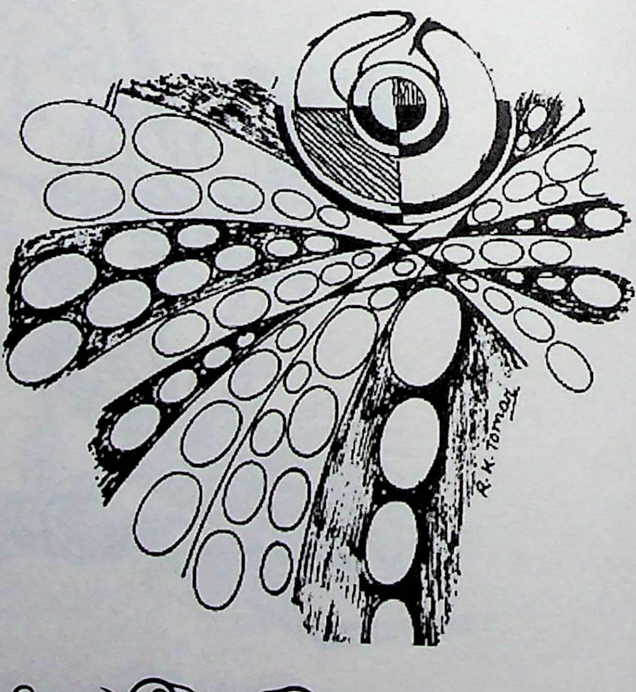
संभव कभी नहीं हो सकता
रखना पहरों में आँसू।
नहीं छुपाकर रखना संभव
मन की लहरों में आँसू।
कवियों ने लिख डाले इनपर
गीत अनेकों सुख दुख के
छाए रहते हैं ग़ज़लों की
हरदम बहरों में आँसू।



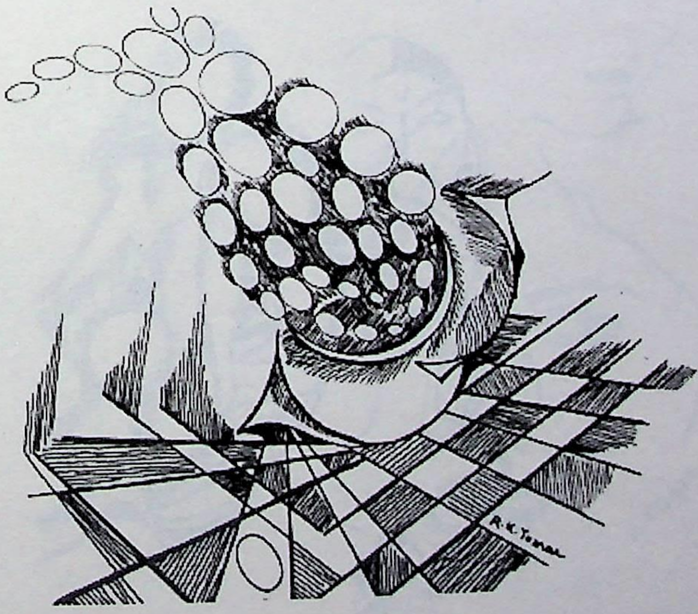
छिपा–छिपा कर रख्खे दिल के
भावों को पढ़ते आँसू।
मतलब भावों का गुन लेते
तब आगे बढ़ते आँसू।
दुविधा में पड़ जाते हैं जब
मन मानस तक़रार करें
इन दोनों पर, नासमझी का,
दोष नहीं मढ़ते आँसू।



बहने का अधिकार कभी ना
आँखों से छीने आँसू।
कभी कभी मोटे मोटे से
कभी बहें झीने आँसू।
ज़ख्मी दिल की बात समझते
वक्त नहीं ज़ाया करते
झट–से चल पड़ते हैं मन के
घावों को सीने आँसू।



पर की पीड़ा में अपना भी
मन गीला करते आँसू।
अपनी पीड़ा में बह–बह कर
तन गीला करते आँसू।
कातर मनवा चींख उठे जब
अविरल धारा में बहते
अतिशय बरस बरस रेतीला
रन गीला करते आँसू।



आँसू लावनी

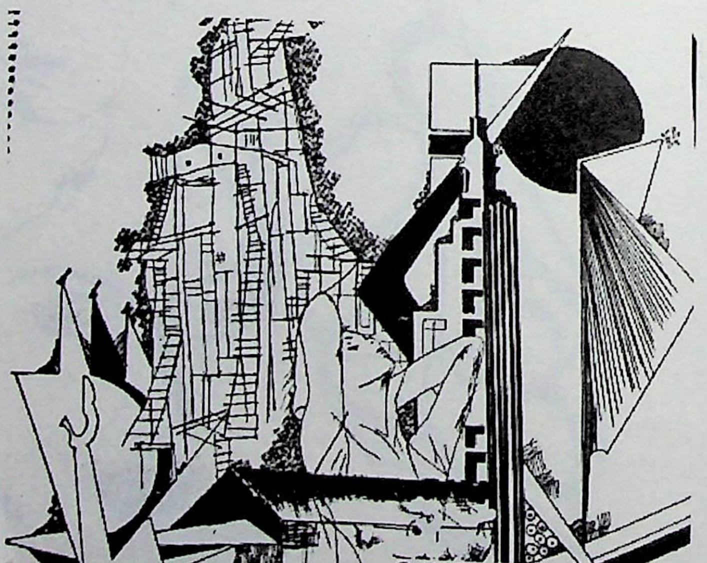
अंतर मन से काम करें तो
आते हैं असली आँसू।
वर्ना ग्लिसरीन से लाने
पड़ते है नकली आँसू।
रंगमंच के किरदारों की
कला यही तो न्यारी है
तन्मयता में दर्शक समझें
नकली को असली आँसू।।



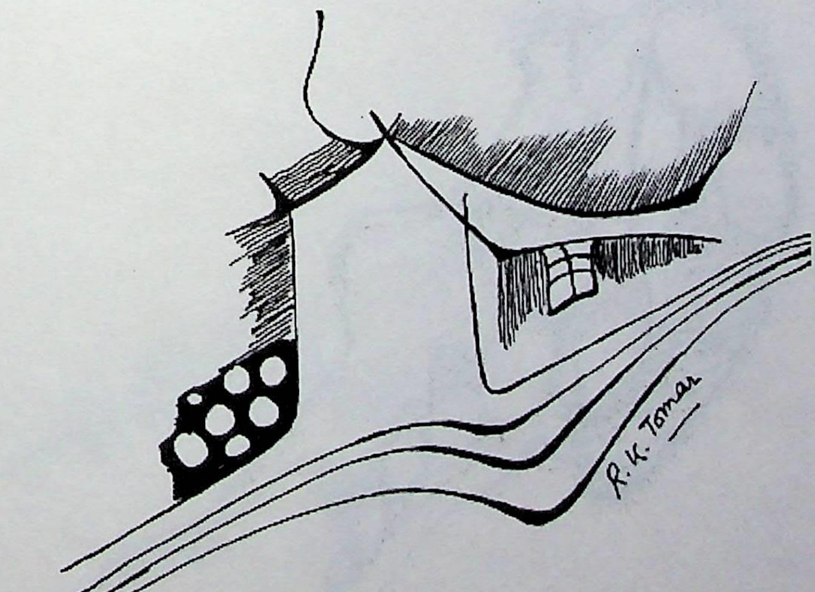
शब्दों से पर मन की भाषा
के होते कायल आँसू।
बिना कहे कुछ, आँखों आँखों
में होते घायल आँसू।
रहते हैं चुपचाप कभी तो
सरर–सरर कर बहते हैं
नाच नचा देते नैनों को
हो जाते पायल आँसू।



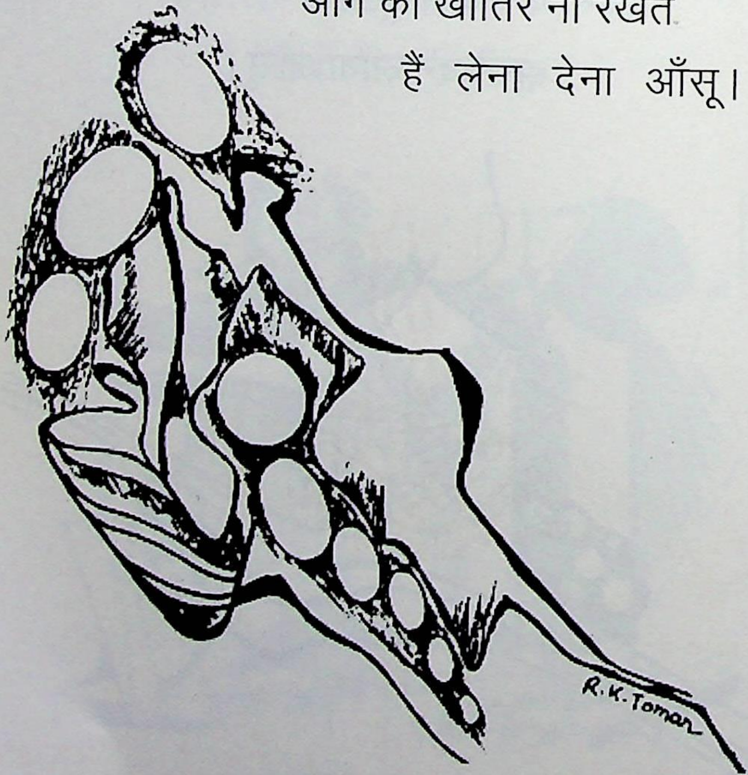
भारत हो खुशहाल, कभी ना
आँखों में आएँ आँसू।
सभी जनों की आँखों से अब
ओझल हो जाएँ आँसू।
सोने की चिड़िया बन भारत
दुनिया का सरताज बने
कभी नहीं भारत माता की
आँखों में आएँ आँसू।



दिल का मर्म समझते वे ही
कब करते दावा आँसू।
बात चुनौती की हो नैनों
पर बोलें धावा आँसू।
उबल उबल कर आस पास का
मौसम भी गरमा देते
नयनों के ज्वालामूखी से
झरते बन लावा आँसू।



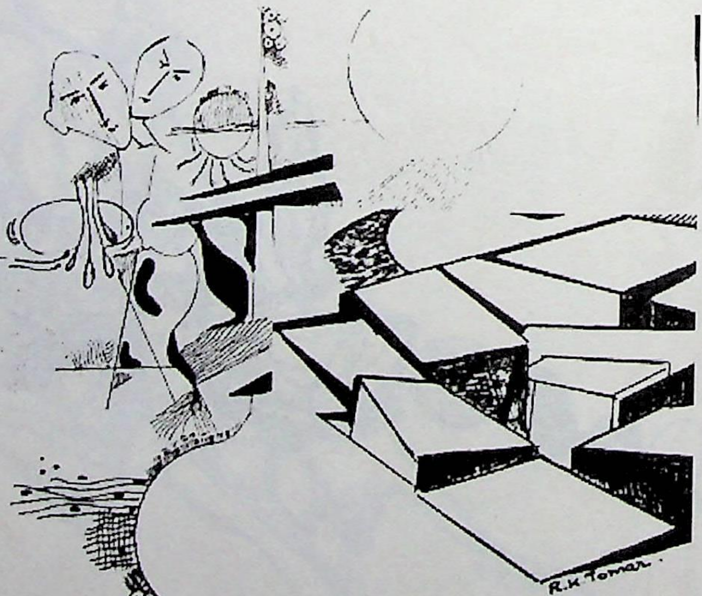
टपका टपका कर ले आते
बूँद बूँद सेना आँसू।
और चपलता से जानें मन
की कश्ती खेना आँसू।
त्वरित गति से चुकता करते
हैं हिसाब पल पल का ये
आगे की खातिर ना रखते
हैं लेना देना आँसू।



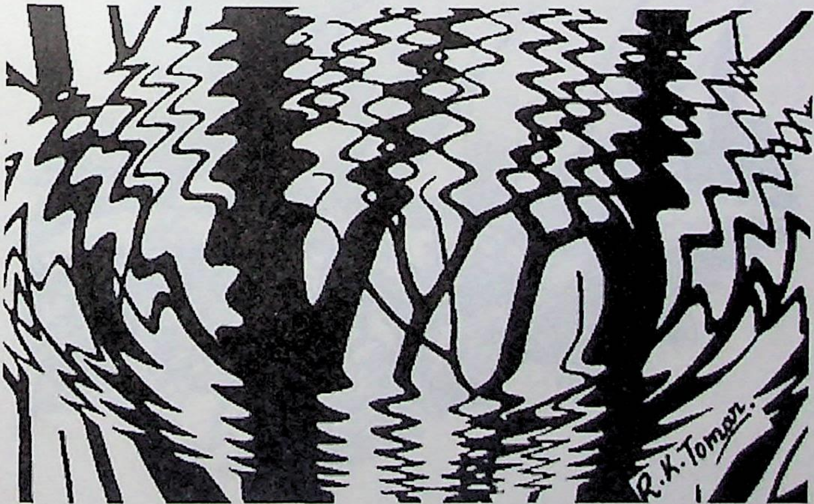
मन के उद्‌गारों, नयनों की
असली थाती हैं आँसू।
जीवन पथ के दुख दीपक तो
उसकी बाती हैं आँसू।
ओर छोर कष्टों का जब जब
कहीं दिखाई ना देता
लगता जैसे शनीदेव की
साड़ेसाती हैं आँसू।



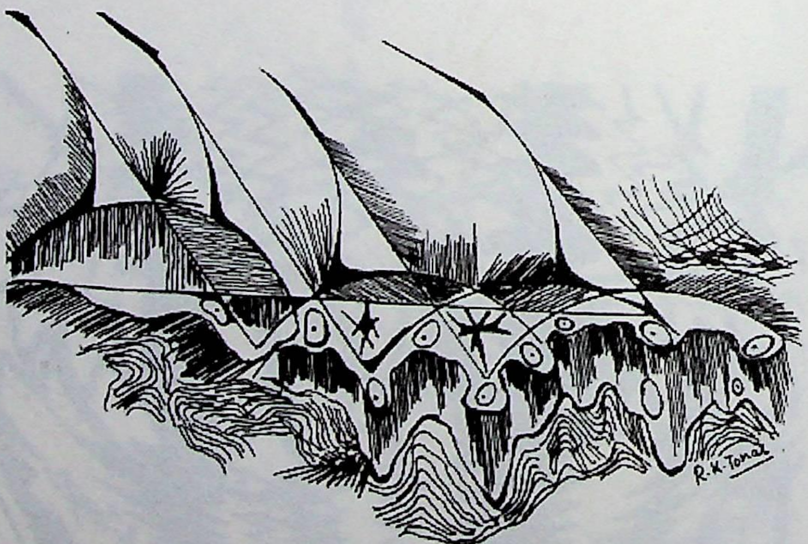
सावन में उफनाती कल कल
बहती नदियाँ हैं आँसू।
कुदरत की आँखों में बिंबित
दुख की सदियाँ हैं आँसू।
धरती टिकी हुई है केवल
सत्कर्मों की वेदी पर
मन की आँखों से, पहिचानें
नेकी बदियाँ हैं आँसू।



मौसम जैसे रूप बदलते,
पल में, हरियाले आँसू।
रूखी आँखों को नम करते,
देखो, पनियाले आँसू।
घंटों बहने से, गालों पर
सूख, लकीरें बन जातीं
पता नहीं क्या क्या संदेशा,
लिखते मटियाले आँसू।



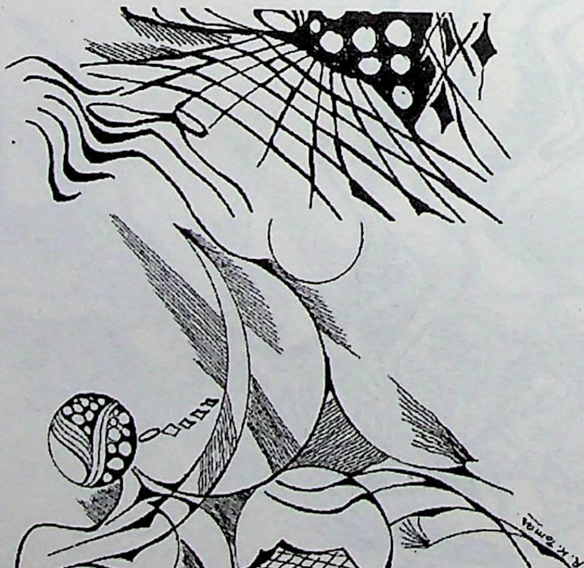
दर्द बहा देते हैं सारा
नैनों के रस्ते आँसू।
ये उपचार करें पीड़ा का
औषध के बस्ते आँसू।
किसी किसी की आँखों का
पानी होता अनमोल बड़ा
जिनका पुरसाहाल न कोई
उनके हैं सस्ते आँसू।



पीड़ा पर्वत सी हो जाए
तो लगते सरने आँसू।
अपने संग संग लेकर आते
यादों के झरने आँसू।
उर्वर सेज मिले तो आते
वरना पाँव नहीं धरते
जल जयमाला लेकर आते
नयनों को वरने आँसू।



मन के रोके ना रुकते हैं
आने को अकड़ें आँसू।
रोने वाली बात अगर हो
तो झट से पकड़ें आँसू।
दम फूले या साँस घुटे फिर
ये परवाह नहीं करते
मजबूती से कसकर घेरा
हियरे को जकड़ें आँसू।



जयशंकर से कालजयी इक
'आँसू लिखवाते आँसू'।
निशानिमंत्रण बच्चन जी के
दिल से रचवाते आँसू।
तुलसी से पत्नी के तानों ने
रामायण लिखवाई
बड़े बड़े ग्रंथों की, सच में,
रचना करवाते आँसू।



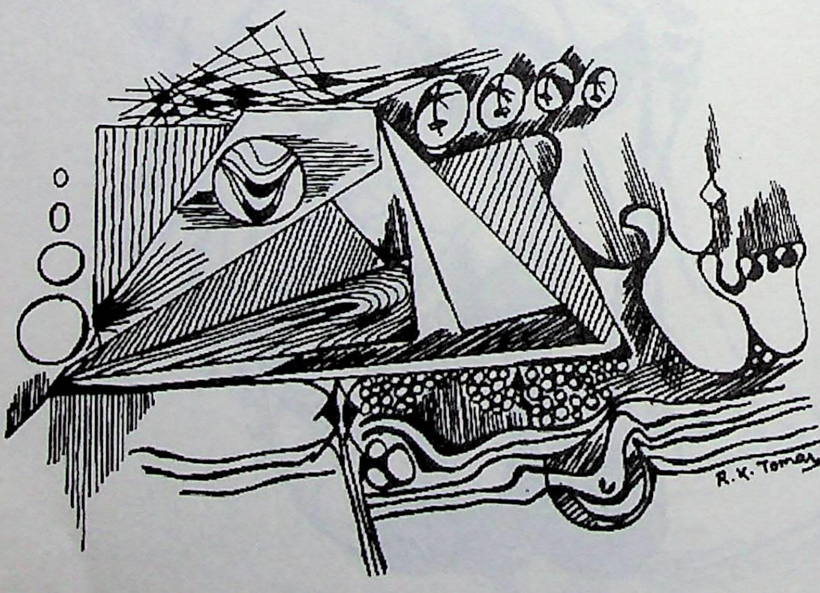
पियक्कड़ों के हाव–भाव से
टपकें बन हाला आँसू।
मादक आँखों से निकलें तो
मय का इक प्याला आँसू।
राजा हो या रंक नहीं पड़ता
है फ़र्क यहाँ कोई
हर पीने वाले के मिस हैं
केवल मधुशाला आँसू।



नयन झील है गहरी गर तो
तट पर खड़ा शज़र आँसू।
मन है गाँव अगर भावों का
पूरा एक शहर आँसू।
उथल पुथल मन की गहराई
में हरदम चलती रहती
दावानल मन के अंदर तो
बाहर एक शरर आँसू।

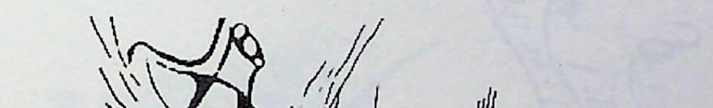


हरे–भरे दर को, पल भर में,
कर देते बंजर आँसू।
चीर जिगर को, रख देते हैं
जैसे हो खंजर आँसू।
चाहे कितना भी अच्छा हो
उत्सव का माहौल कहीं
पल–भर में पैदा कर देते
दर्दनाक मंजर आँसू।

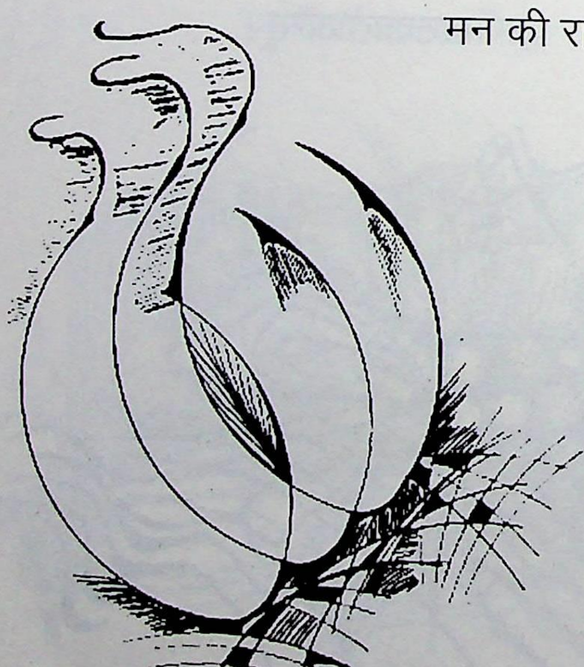


आँसू लावनी

हिड़की से आए तो कौर
गले में अटकाते आँसू।
नाक फुला आँखों का जल
नथुनों से टपकाते आँसू।
जिसने अहंकार से मन के
दरवाज़े हैं बंद किए
उस निष्ठुर दंभी के मन के
द्वारे खटकाते आँसू।



ना कहता मन फिर भी आते
करते मनमानी आँसू।
बच्चों से ज़िद पर आ करते
हरकत बचकानी आँसू।
लुकाछिपी का खेल खेलते
मन–आँसू मिलकर दोनों
खेल खेल में मन राजा तो
मन की रानी हैं आँसू।



मन में चोर बसा हो छल से
नैना मटकाते आँसू।
बात अगर गहरी हो आकर
मुद्दे भटकाते आँसू।
जब थोड़े थोड़े आएँ तो
अटक पलक पर रह जाते
बड़ी अदा से उसे हटाने
पलकें झटकाते आँसू।



आँसू लावनी

बच्चों की ज़िद मनवाने को
आते हैं चटपट आँसू।
ज़िद पूरी हो जाने पर गायब
होते झटपट आँसू।
संग सदा बच्चों के ये भी
बच्चे से बन जाते हैं
बच्चों जैसे होते हैं भोले,
प्यारे ,नटखट आँसू।



बात अगर हो पक्षपात की
तो होते रोषित आँसू।
करें बगावत गर तो अनशन
करते हैं घोषित आँसू।
इनकी यारी होती जग में
ना केवल दुख दर्दों से
तीखा खाने प्याज़ कतरने
से होते पोषित आँसू।



हरे भरे ज़ख्मों की उजड़ी
बगिया के माली आँसू।
अंतरमन की चोटों के बन
कर रहते आली आँसू।
चाहे कुछ हो जाए हरदम
मन का साथ निभाते हैं
मन के बंद किवाड़ों की इक–
–लौती हैं ताली आँसू।

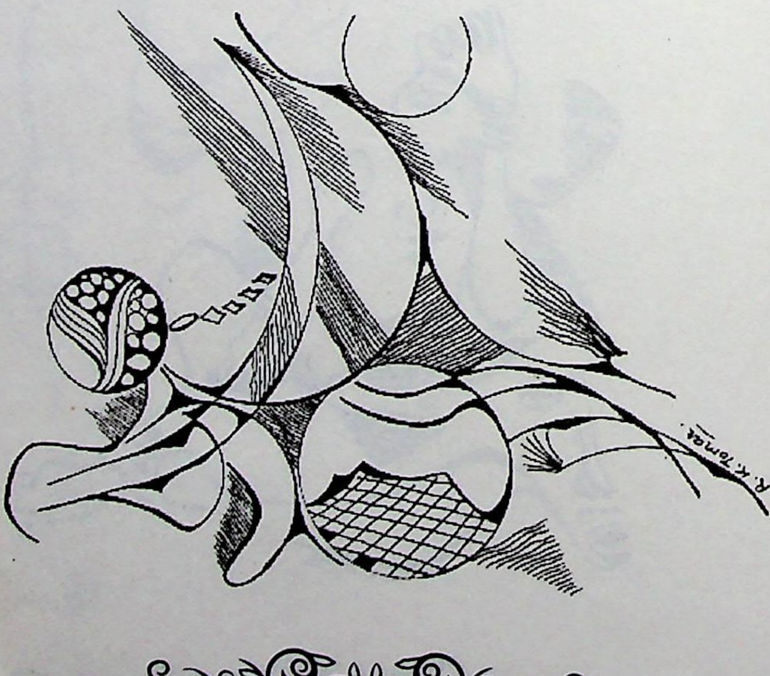


ला देती तूफान, गाँव की
बहा बहा गोरी आँसू।
लिखा मिटाते दिल पर बह,
करते किताब कोरी आँसू।
दिल कहता, वो आएँगे ,ना
गोरी की अँखियाँ माने
आश निराशा के बिच करते
हैं जोरा जोरी आँसू।



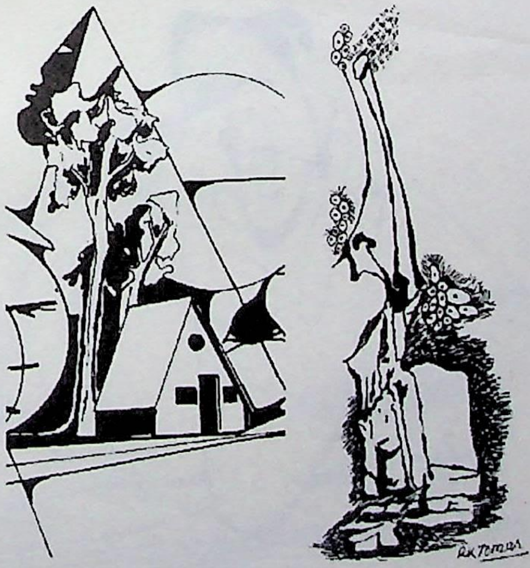
आँसू लावनी

दो बिछड़ों के बीच बनें, इक
स्नेहपगी डोरी आँसू।
कटु रिश्तों को मधुर बनाते
गन्ने की पोरी आँसू।
गान मधुर गुन गुन करके ये,
सबको अपना कर लेते
और कभी झट से सो जाते
सुनकर के लोरी आँसू।



आँसू लावनी

भाव भवन में, बिना लिए कुछ,
करते मज़दूरी आँसू।
जिस माँ का बालक भूखा हो
उसकी मजबूरी आँसू।
सारे कष्टों की फरियादें
अंतरमन में होती हैं
नयनों को सम्मन भिजवाते
बनकर मज़कूरी* आँसू।



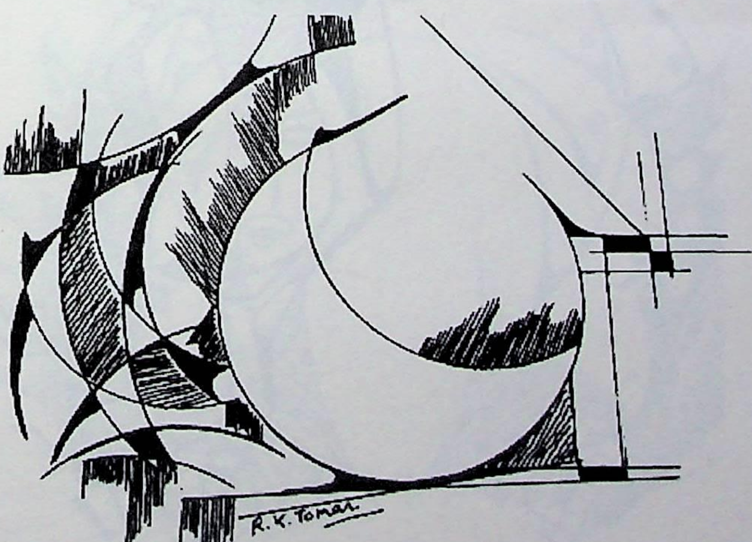
* सम्मन ले जाने वाला

आँसू लावनी

भारी मन को पुचकारें, बन
संवेदनकर्ता आँसू।
जन जन के, तन मन के, सारे
कष्टों के हर्ता आँसू।
कहते हैं, मुख से निकली, हर
बात पराई हो जाती
बन जाते चुपचाप, सभी के
दुःखों के धर्ता आँसू।



पंचभूतनिर्मित काया से
होते हैं मृण्मय आँसू।
कान्हा की पूजा में डूबें
मीरा के तन्मय आँसू।
जान गया जो, परमतत्व को,
जगती की नश्वरता को
श्री चरणों में अर्पित होकर
हो जाते चिन्मय आँसू।

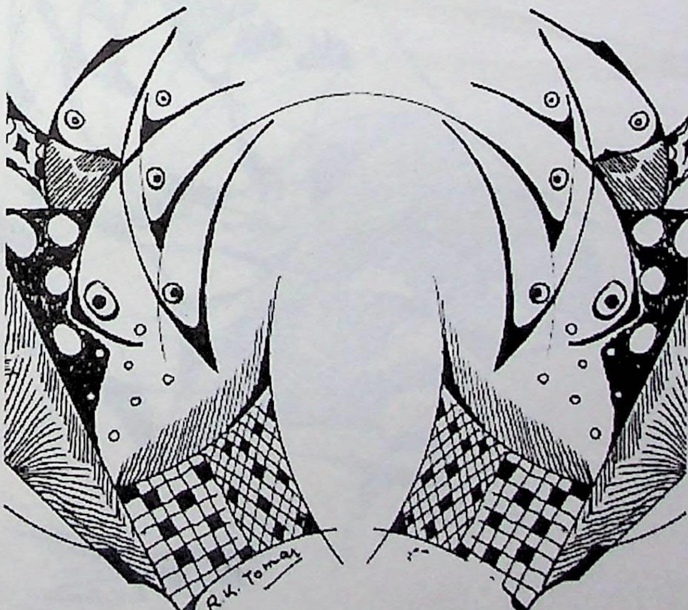


आँसू लावनी

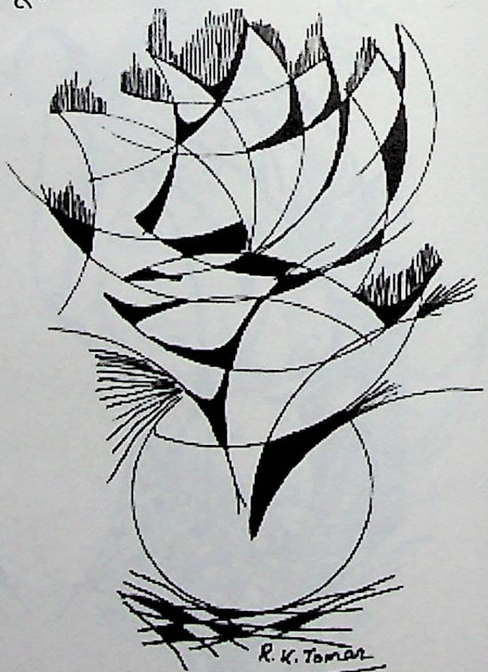
दिल नाजुक सा छिल छिल जाए
जब मारें कोड़े आँसू।
परछाँई तक साथ छोड़ दे
साथ नहीं छोड़े आँसू।
रोने को जो भाग्य मानकर
हाथों पर धर हाथ रहें
अटकाते उनके जीवन की
राहों में रोड़े आँसू।



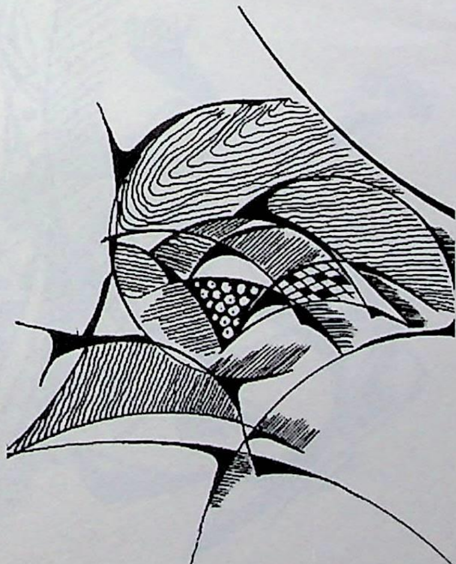
पानी केरी बूँदों जैसे
होते बिन काया आँसू।
संसारी जीवन में रचते
मोह और माया आँसू।
लिखा पुराणों में, जब यह तन,
प्राणहीन हो जाता है
साथ वहाँ भी ,सूक्ष्म जीव का,
देते बन साया आँसू।



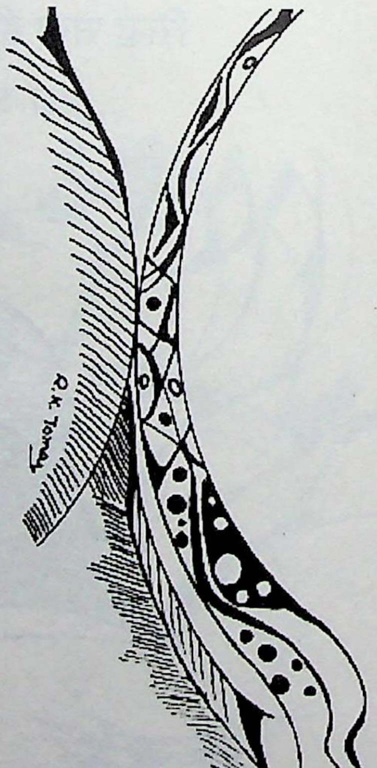
दीन हीन, मन के हारों के,
बहें यहाँ दैनिक आँसू।
नर तन में आवास बनाते
कहलाते दैहिक आँसू।
होकर जब तल्लीन, पुकारे
भक्त प्रभु को, अंतर से
दाता के भी नयन भिगोते
देवों के दैविक आँसू।



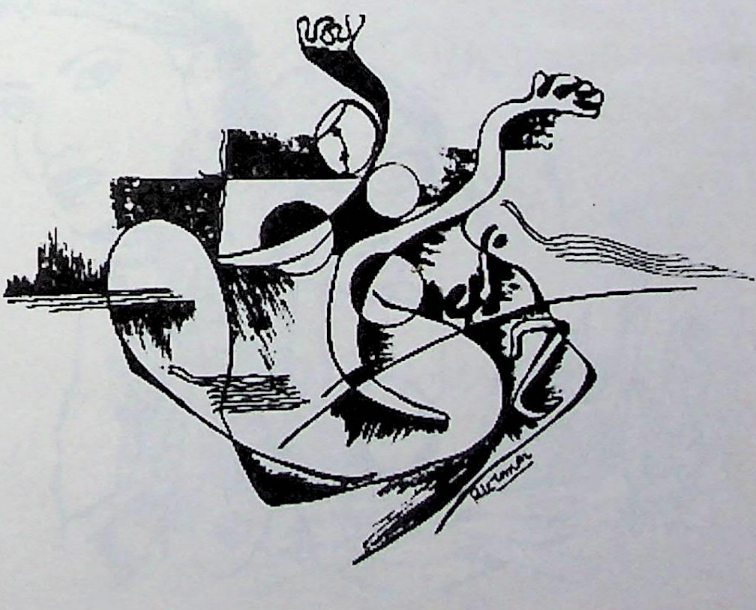
दरशन देंगे प्रभुवर, रहते
परम प्रतीक्षा में आँसू।
साबित संतोषी होते हैं
कठिन परीक्षा में आँसू।
ऊपर वाले पर विश्वास
हमेशा धीरज देता है
सिद्ध सदा ही होते हैं स्थित–
प्रज्ञ समीक्षा में आँसू।



छोटे छोटे कष्टों को
कर देते अनदेखा आँसू।
पहचानें अपने अधिकारों
की सीमा रेखा आँसू।
यूँ ही ख़र्च नहीं कर देते
इस अनमोल ख़ज़ाने को
सारे ग़लत सही तर्कों का
रखते हैं लेखा आँसू।



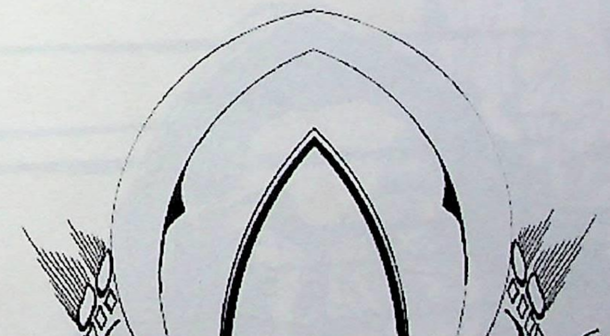
रो–रो गालों पर फैलाते
आँखों का अंजन आँसू।
मन की सारी पीर बहा
बन जाते दुखभंजन आँसू।
सर्कस के निर्धन नट करते
नम आँखों से खेल कई
हँस हँस कर लोगों का, उनके
करते मन–रंजन आँसू।



पारावार, न हो दुख का,
बन जाते कलिहारी आँसू।
आँखों में इतना जल लाते
लगते पनिहारी आँसू।
ऊखल से बाँधे, फिर रोए,
खुद पर क्रोध करे खुद ही
मात यशोदा के, कान्हा पर,
जाएँ बलिहारी आँसू।



चारों ओर घिरे रहते हैं,
नयनन अलियों में आँसू।
केवल आ सकते हैं होकर
मन की गलियों में आँसू।
इनके मिस, मन ही ईश्वर है,
मन से बड़ा नहीं कोई
लीन सदा रहते हैं, मन की,
*विरुदावलियों में आँसू।



* स्तुति

आँसू लावनी

भावों के घट में, मनमथनी
से, करते मंथन आँसू।
बाहर पग धरने से पहले
बहुत करे चिंतन आँसू।
इनका असर बहुत गहरा है
तुच्छ नहीं इनको जानो
सारी सृष्टि हिल जाती है
जब करते क्रंदन आँसू।



घर के बड़े नहीं देते हैं
कभी नसीहत में आँसू।
किसी किसी को, कभी कभी तो,
मिलें वसीयत में आँसू।
मिले कहाँ से व किस वजह से
इससे फर्क नहीं पड़ता
दमखम से, हरदम नयनों की,
रहें असीलत* में आँसू।



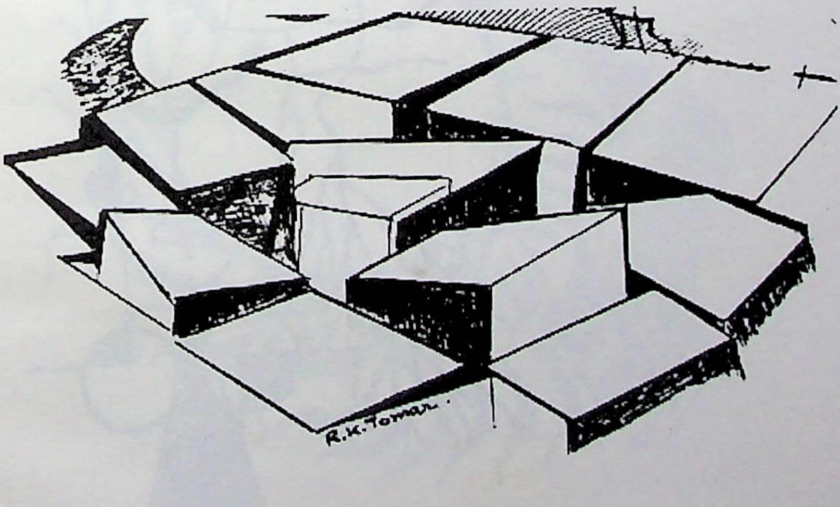
* पैत्रिक अधिकार, मौरूसी कब्जा

आँसू लावनी

छोड़ अचानक कहाँ गए तुम
रुकते ना पापा आँसू।
भैया ने धर धीर, गहनता
से, लगता नापा आँसू।
विधि का ये विधान, कैसा है,
मँझधारे में छोड़ चले
रोके से भी ना रुक पाते
खोते हैं आपा आँसू।

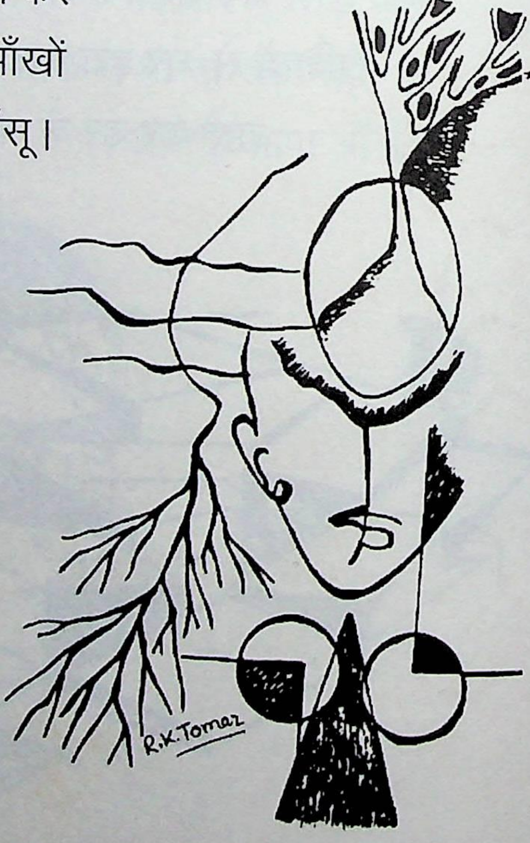


कलह रहे घर में, तो बहते,
दीवारोदर के आँसू।
उजड़े घर के कोने कोने
में, सिसकें घर के आँसू।
चार दिवारी से ना बनता
घर बनता है लोगों से
खुशियों से, घर हरा भरा हो,
रहते डर डर के आँसू।

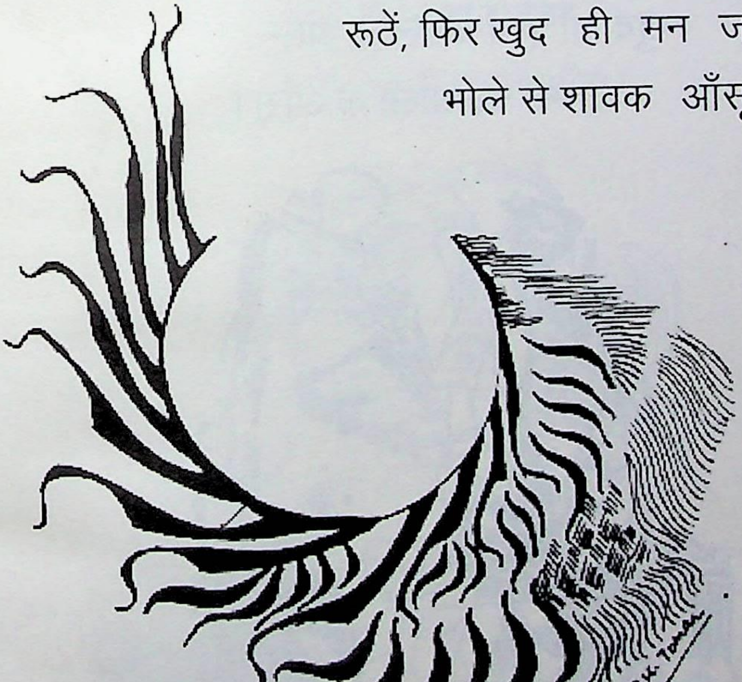


आँसू लावनी

कभी भगीरथ के, ला पाए,
धरती पर गंगा आँसू।
सब कुछ संभव कर देते हैं
गर हो मन चंगा आँसू।
आँसू भी अच्छे होते हैं
बड़े बड़े ये काम करें
जबरन गर लाएँ तो, आँखों
से लेते पंगा आँसू।



ऐसे बहते त्वरित गति से
फुर्तीले, धावक आँसू।
क्रोधित हों तो, अंगारों से
बरसें, बन पावक आँसू।
जैसा चाहें रूप धरें ये
हैं इनको अधिकार सभी
रूठें, फिर खुद ही मन जाएँ
भोले से शावक आँसू।



कम अंतर का तनाव करते
हैं, बदहाली के आँसू।
मातम में, जन जन को लाते
रुदन, रुदाली के आँसू।
लिंकन, चर्चिल सबके सम्मुख
रो, करते थे राह सरल
खुद को इंसां कहलाने, आ–
–ते बलशाली के आँसू।



बच्चे, घर से दूर रहें, तो
माँ–पा के बहते आँसू।
पास रहें, मन से न पास हों,
ग़म ये भी सहते आँसू।
टूटे डोर आस की, फिर भी,
प्यार सदा भारी पड़ता
रहो सुखी तुम सदा सर्वदा
माँ–पा के कहते आँसू।

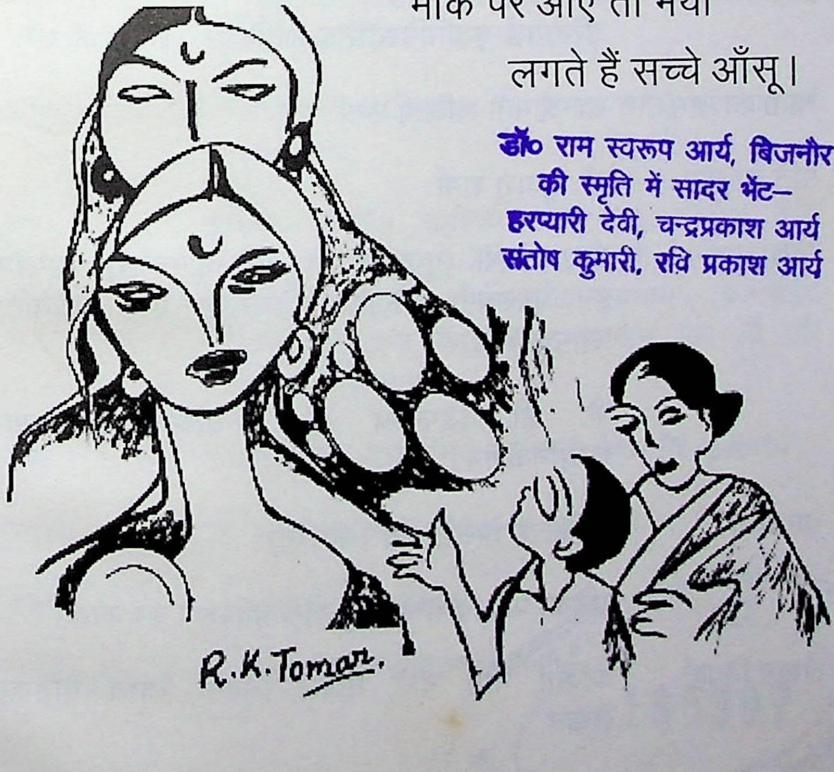


जुबाँ नहीं दिल के सब जज़्बातों
को, दे पाते आँसू।
नहीं दुआओं को भी, पल पल
आते, सब भाते आँसू।
मुस्काते रहने पर हर पल
दुनिया साथ निभाती है
वर्ना, पनाह अँखियों में भी,
कभी नहीं पाते आँसू।



बिना बात के अगर बहें तो
कहलाते बच्चे आँसू।
खुशियों के कारण आएँ तो
लगते हैं अच्छे आँसू।
हँसते–हँसते लोट–पोट हो
जाने पर भी आ जाते
मौके पर आएँ तो भैया
लगते हैं सच्चे आँसू।

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट–
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य



परिचय

नाम : डॉ. (श्रीमती) नीरज शर्मा

साहित्यिक नाम : डॉ. नीरज सुधांशु

जन्म तिथि : 17 सितंबर 1961

जन्म स्थान : लखनऊ

पिता का नाम : श्री भूपेन्द्र नाथ शर्मा
(रिटायर्ड एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर, ओ.एन.जी.सी)

माता का नाम : स्व. श्रीमती ललिता शर्मा

पति का नाम : डॉ. सुधांशु शर्मा

शिक्षा : बी.ए.एम.एस (गुजरात आयु.युनि.जामनगर), डिप्लोमा इन एक्स्पोर्ट मेनेजमेंट(मेडिसिनल एन्ड एरोमेटिक प्लान्ट्स)

पी. जी. डिप्लोमा इन जर्नलिज़्म एंड मास कम्युनिकेशन।

व्यवसाय : चिकित्सा (प्रसूति एवं स्त्री रोग)

वनिका पब्लिकेशन्स में पुस्तक प्रकाशन का कार्य।

लेखन विधाएँ : कविता, गीत, दोहे, ग़ज़ल, निबन्ध, व्यंग्य, मेडिकल लेखन

प्रकाशित कृतियाँ : 'आँसू लावनी'–111–सचित्र मुक्तक। विभिन्न राष्ट्रीय व क्षेत्रीय पत्र–पत्रिकाओं में अनेक बार कविता, व्यंग्य निबंध, लेख इत्यादि का प्रकाशन। 15–से अधिक संकलनों में रचनाओं का प्रकाशन। व्यंग्य संग्रह (आदमी कहीं का), ग़ज़ल संग्रह एवं एक कविता संग्रह प्रकाशनाधीन।

संपादन : ललित काव्य, मैं के इर्द गिर्द (1111–दोहे), आँसू लावनी–(111–ताटंक छंद में मुक्तक), सूर्योदय हुआ(ग़ज़ल संग्रह) मोती की खोज (कविताएँ),उपासना के द्वार से (कविताएँ) आदमी कहीं का–व्यंग्यसंग्रह इत्यादि पुस्तकों का संपादन

प्रसारण : आकाशवाणी नजीबाबाद से समय समय पर वार्ताओं का प्रसारण।

सम्मान : अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, चाँदपुर द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान, जैमिनी अकादमी पानीपत द्वारा 'रामवृक्ष बेनीपुरी जन्मशताब्दि सम्मान', बज़्मेसईद झाबुआ(म.प्र) द्वारा 'शाईरेवतन' सम्मान, स्व. श्री हरि ठाकुर स्मृति सम्मान।

संपर्क : सरल कुटीर , आर्य नगर, नई बस्ती, बिजनौर–246701

दूरभाष : मो– 09412713640 / 01342–262186

ई मेल : niraj_61@yahoo.co.in,

drniraj.s.sharma@gmail.com

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

वनिका पब्लिकेशन्स :

प्रकाशित कृतियाँ:

ललित–काव्य
श्रीमती ललिता शर्मा

आँसू लावनी
डॉ. नीरज सुधाँशु

मैं के सान्निध्य में (1111–दोहे)
वैद्य कृष्ण मोहन 'मंजुल'

मेडिकल डायरेक्टरी 2014–15

सूर्योदय हुआ (ग़ज़ल संग्रह)
वैद्य कृष्ण मोहन 'मंजुल'

Consents in Obstetrics and Gynecology
Dr. Hitesh Bhatt &
Dr. Geetendra Sharma

प्रकाशनाधीन कृतियाँ:

आदमी कहीं का (व्यंग्य संग्रह)
डॉ नीरज सुधाँशु

गाँव की गोरी
वैद्य कृष्ण मोहन 'मंजुल'

मोती की खोज
वैद्य कृष्ण मोहन 'मंजुल'

जागो तुम कवि के सुप्त प्राण
वैद्य कृष्ण मोहन 'मंजुल'

कविता संग्रह
डॉ नीरज सुधाँशु



डॉ. नीरज सुधाँशु

VANIKAA PUBLICATIONS

वनिका पब्लिकेशन्स